www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 11 दिसम्बर 2016 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 11 दिसम्बर 2016 से 17 दिसम्बर 2016

मार्गशीर्ष शु. – 12 ● वि० सं०–2073 ● वर्ष 58, अंक 52, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 193 ● सृष्टि-संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग का 92वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली का 92वाँ वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। आर्य समाज (अनारकली), आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एंव डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली के यशस्वी प्रधान डॉ. पूनम सूरी ने उत्सव के समापन अवसर पर बोलते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कालेधन पर वार किया है हम सब कालेमन पर वार चाहते है। मन बहुत चंचल है बन्दर की तरह हरकत करता है मन भागता रहता है। चंचलमन को शान्त करने के लिए कुछ व्यायाम करें और तो मानसिक साधना करें। उन्होंने कहा ब्रहमचर्य का अर्थ है ब्रहम में विचरना–विचरण करना। यह सब स्वाध्याय से ही मिलेगा। अपना अध्ययन करना भी स्वाध्याय है अपने बारे में सोचें अपने कर्म को याद करें यह भी स्वाध्याय है।

आत्मा मैला नहीं होता है मैला होता है सूक्ष्म शरीर। सूक्ष्म शरीर को साफ करें तभी हमें अच्छा फल और शरीर मिलेगा। "ओ३म् जाप करें बहुत ही लाभ मिलेगा। सत्संग का अर्थ "सत्य का संग करना है न कि नाच गाना आदि। अच्छा काम करते रहेंगे तो अवश्य ही काला मन स्वच्छ हो जायेगा।

उत्सव में तीनों दिन अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता डॉ. वागीश ने "ईश्वर कहाँ है व कैसा है? एवं ईश्वर की प्रार्थना–उपासना क्यों और कैसे?" विषय पर सविस्तार चर्चा की।

इस वर्ष वार्षिक उत्सव में महात्मा आनन्द स्वामी चित्रकला, स्वामी श्रद्धानन्द श्लोक उच्चारण महात्मा हसराज नुक्कड नाटक एवं श्री अमीचन्द गायन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जिसमें दिल्ली, एन.सी.आर. एवं अन्य जिलो के डी.ए.वी. 40 विद्यालयों के 800 से अधिक छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं एवं स्कूलों को अन्तिम सत्र पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे आर्य समाज (अनारकली) के प्रधान डॉ. पूनम सूरी ने पुरस्कृत किया।

प्रधानाचार्यों की एक विचार गोष्ठी सम्पन्न हुई जिसमें डी.ए.वी. स्कूल पुष्पाञ्जलि पीतम पुरा, श्रीमती रश्मि बिस्वाल ने "आर्य समाज–एक प्रेरणा" डी.ए.वी. स्कूल फेस–4 अशोक विहार की श्रीमती कुसुम भारद्वाज ने "मेरी अस्मिता क्या है" डी.ए.वी. विकासपुरी की श्रीमती चित्रा नाकरा ने "वर्तमान पीढी–शिक्षा और बदलता परिवेश" तथा सी.जे. डी.ए.वी. मेरठ ने "शिक्षा के बदलते संदर्भ के आर्य समाज" विषय पर अपने–अपने विद्वत्तापूर्ण विचार व्यक्त किये।

चारों दिन आर्य समाज (अनारकली) का सभागार श्रोताओं की भीड़ से खचाखच भरा रहा। श्री रामनाथ सहगल, श्री टी. आर. गुप्ता, श्री आर.एस. शर्मा, प्रि. मोहनलाल, श्री अजयसूरी, श्री एस.के. शर्मा, डॉ. बी. सिंह, श्री एच.एल. भाटिया, श्री एस.एम. गुप्ता, श्रीमती अदलखा, श्रीमती मणी सूरी, श्री जे.के. कपूर, श्री अरुण अदलखा, श्री बलेचा जी, श्री चुघ जी, श्री राम शर्मा, श्री आर.आर. भल्ला डॉ. मनमोहन, श्री अजय सहगल, प्रि. स्नेहमोहन आदि की उपस्थिति प्रेरणास्पद रही। डी.ए. वी. भठिण्डा के छात्रों द्वारा बनाये चित्रों की प्रदर्शनी आकर्षक रही।

कार्यकारी प्रधान, श्री अजय सूरी ने सबका धन्यवाद किया। अन्त में शान्तिपाठ के बाद उत्सव में पधारे सभी आर्यजनों ने ॠषि लंगर का आनन्द लिया।

हंसराज महिला महाविद्यालय जालंधर में हुआ वेद-कथा उत्सव का आयोजन

हंसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर के प्रांगण में आर्य समाज बिक्रमपुरा, जालंधर के 131वें वार्षिकोत्सव के अधीन आयोजित वेद कथा उत्सव का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्यातिथि श्री इरविन खन्ना, सम्पादक उत्तम हिन्दू, महोपदेशक आचार्य राजू वैज्ञानिक, डॉ रेखा कालिया भारद्वाज, प्रधाना आर्य समाज बिक्रमपुरा, श्री इंद्रजीत तलवाड़, मंत्री, श्री रविन्द्र शर्मा, कोषाध्यक्ष तथा श्री कुंदन लाल अग्रवाल, सदस्य स्थानीय समिति का प्राचार्या डॉ श्रीमती अजय सरीन ने पुष्पगुच्छ भेंटकर स्वागत किया। अपने सम्बोधन में प्राचार्या जी ने कहा कि आर्य समाज का उद्देश्य अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाना है जिसके लिए स्वामी दयानन्द, महात्मा हंसराज, महात्मा आनन्द स्वामी जी के पश्चात् आर्य रत्न डॉ. पूनम

सूरी जी कार्यरत हैं। आज का यह वेद–कथा उत्सव भी इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आयोजित है। उन्होंने आर्य समाज के नौंवे नियम की व्याख्या करते हुए दूसरों की उन्नति में गर्व महसूस करने की प्रेरणा दी।

इस उपरान्त मुख्यातिथि श्री इरविन खन्ना जी ने अपने विचारों के माध्यम से सकारात्मक सोच एवं मर्यादित जीवन जीने की प्रेरणा दी। उन्होंने शुद्ध विचारों एवं अच्छे कर्मों को ग्रहण करने के लिए कहा। इसी उपलक्ष्य में डॉ. रेखा कालिया भारद्वाज जी ने नारी शक्ति को सकारात्मकता ग्रहण लिए प्रेरित किया।

आचार्य श्री राजू वैज्ञानिक जी ने अपने बहुमूल्य विचारों के माध्यम् से सर्व उपस्थित जनों को ज्ञान प्रदान किया। उन्होंने जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों में भी भीतर के सन्तुलन को बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। ईश्वर की सर्वव्यापकता को ध्यान में रखते हुए पाप कर्म से बचते हुए पुण्य पथ पर अग्रसर रहने को कहा। वातावरण को आनन्दमय बनाने हेतु श्री राजेश प्रेमी एवं श्री प्रद्युम्न जी ने भजन प्रस्तुत किए। सभा के अन्त में श्री इन्द्रजीत तलवाड़ जी ने समस्त उपस्थित आर्यजनों, नारी शक्ति एवं युवा शक्ति के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ. ए.के.पाल, वाइस चांसलर, डी.ए.वी. यूनिर्वसिटी, प्रिंसीपल बी.बी. शर्मा, प्रिंसीपल मनोज कुमार, प्रिंसीपल रश्मि विज, प्रिंसीपल कमला सैनी व कॉलेज का टीचिंग एवं नॉन टीचिंग स्टाफ भी उपस्थित रहा।

मंच संचालन डॉ. अंजना भाटिया ने किया। अन्त में शान्ति पाठ प्रस्तुत कर सभा का समापन किया गया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 11 नवम्बर 2016 से 17 दिसम्बर 2016

समित्पाणि शिष्य के उद्गार

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

एतास्ते अग्ने समिधः, त्वमिद्धः समिद् भव।
आयुरस्मासु धेहि, अमृतत्वमाचार्याय।।

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **अग्निः** छन्दः **अनुष्टुप्**।

● **(अग्ने)** हे यज्ञाग्नि! **(एताः)** ये **(ते)** तेरे लिए **(समिधः)** समिधाएँ [हैं], [इनसे] **(त्वं)** तू **(इत्)** निश्चय ही **(सम् इद्धः)** संदीप्त **(भव)** हो। **(अस्मासु)** हम [इनसे] **(त्वं)** तू **(इत्)** निश्चय ही **(सम् इद्धः)** संदीप्त **(भव)** हो। **(अस्मासु)** हम [ब्रह्मचारियों] में **(आयुः)** जीवन, [और] **आचार्याय** (आचार्य) के लिए **(अमृतत्वम्)** अमरत्व **(धेहि)** प्रदान कर।

● मैं समित्पाणि होकर आचार्य के समीप उपनीत होने तथा विद्याध्ययन करने आया हूँ। अपने हाथ में मैं समिधायें इस निमित्त लाया हूँ कि इनसे मैं अग्निहोत्र करूँगा, समिधाओं को एक–एक कर अग्नि में आहुति दूंगा।

हे यज्ञाग्नि! ये तेरे लिए समिधायें हैं, इनसे तू समिद्ध हो, सम्यक् प्रकार से प्रदीप्त हो। देखो, ये शुष्क समिधायें, जो सर्वथा निस्तेज थीं, अग्नि में पड़कर प्रज्ज्वलित हो उठी हैं। ऐसे ही मुझे भी आचार्य–रूप अग्नि का ईंधन बनकर ज्ञान एवं सत्कर्मों से प्रज्ज्वलित होना है। मैं निपट अबोध–अज्ञानी बालक अप्रज्ज्वलित समिधाओं के समान ही निस्तेज हूँ, आचार्याधीन गुरुकुल–वास करके मुझे ज्ञान की ज्वालाओं से प्रदीप्त होना है।

आचार्य और ब्रह्मचारियों के मध्य में जलनेवाली हे यज्ञाग्नि! तू हम ब्रह्मचारियों को आयु प्रदान कर, हमारे अन्दर जीवन निहित कर। हम यही नहीं जानते कि इस संसार में किसलिए आये हैं और हमें कहाँ जाना है तथा जीवन किस प्रकार व्यतीत करना है। जीवन जीने की कला का बोध तू हमें करा। हे अग्नि! तू गुरुकुल की गुरु–शिष्य परम्परा का उज्ज्वल प्रतीक है। जो समिधाओं का और तेरा सम्बन्ध है, वही घनिष्ठ सम्बन्ध गुरुकुल में गुरु और शिष्यों का है। गुरुकुल के व्रतपालन, गुरुकुल की दिनचर्या, गुरुकुल के ज्ञानाग्नि–समिन्धन, गुरुकुल की कर्मपरायणता, गुरुकुल की तपस्या, गुरुकुल के संयम, गुरुकुल के योगानुष्ठान आदि सबका तू प्रतीक है। हे व्रतपति अग्नि! तुझमें समिधायें डालते हुए हम इन समस्त भावनाओं को अपने हृदय में धारण करते हैं।

हे गुरुकुलीय अग्निहोत्र की अग्नि! जहाँ तू हमें जीवन प्रदान करेगी, वहाँ हमारे आचार्य को अमृतत्व प्रदान कर। हम ही अपने आचार्य को मार सकते या अमर कर सकते हैं। हम तुझ अग्नि में तपकर ऐसे जीवन के धनी बनें कि हमसे आचार्य की कीर्ति चारों ओर फैले। जब कोई हमें गुणी और सत्कर्मनिष्ठ देखकर पूछेगा कि ये किस आचार्य के शिष्य हैं, तब हमारे आचार्य का नाम अमर होगा। हम यदि आचार्य के नाम को अमर करने में किंचिन्मात्र भी कारण बन सकेंगे, तो हम अपने को धन्य समझेंगे। हे गुरुकुल के अग्नि! तुम्हारी जय हो, हे गुरुकुल के पुण्यश्लोक आचार्य! तुम्हारी जय हो। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

मानव जीवन गाथा

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में चर्चा हो रही थी कि मुण्डक ऋषि के अनुसार तीसरे साधन से आत्मदर्शन होता है। यह तीसरा साधन है सम्यक्, यथार्थ, ठीक और उचित ज्ञान। सम्यक् ज्ञान दो प्रकार का होता है–एक प्रकृति से सम्बन्धित, दूसरा आत्मा से सम्बन्धित। प्रकृति का ज्ञान नहीं तो शरीर के कष्ट दूर नहीं होंगे और यदि आत्मा का ज्ञान नहीं तो आनन्द नहीं मिलेगा जो केवल आत्मदर्शन से मिलता है।

सम्यक् या ठीक ज्ञान से मन वश में आता अवश्य है। इसके वश में होने से आत्मा के दर्शन भी होते हैं। सत्य, तप और सम्यक् ज्ञान के अतिरिक्त आत्मदर्शन के लिए चौथी आवश्यक वस्तु है, ब्रह्मचर्य। यह आत्मा निर्बल मनुष्य को कभी प्राप्त नहीं होता।

—अब आगे

इसके पश्चात् पाँचवीं आवश्यक बात दोषों को समाप्त करना है। मनुष्य का अन्तःकरण प्रायः तीन दोषों को साथ लिए रहता है। शास्त्रों ने उन्हें नाम दिए हैं– मल, विशेष और आवरण। ये तीनों जब तक दूर न हों, तब तक भी आत्मा के दर्शन नहीं होते।

राजा अकबर एक दिन वन में आखेट करता हुआ दूर निकल गया। सन्ध्या हो गई। राजा ने सोचा– नमाज़ पढ़ लूँ। घोड़े से उतरा। वन में चादर बिछाकर नमाज़ पढ़ने बैठ गया। उसी समय एक ग्रामीण स्त्री एक ओर से तीव्र गति से चलती हुई आई। प्रातःकाल से ही उसका पति पशु लेकर वन में गया हुआ था, अभी तक लौटा नहीं था। उसकी खोज में वह शीघ्रता से चली जाती थी। उसने अकबर को नहीं देखा। एक ओर से आई, चादर पर पाँव रखती हुई शीघ्रता से आगे बढ़ गई। अकबर उस समय कुछ बोला नहीं, परन्तु उसको क्रोध बहुत आया। वह नमाज़ पढ़कर उठा ही था कि वह स्त्री अपने पति को मिलकर वापस आ गई। अब उसके मन में विकलता नहीं थी, गति में पहले जैसी तीव्रता नहीं थी। अकबर ने उसे रोककर कहा, "कैसी मूर्ख लड़की है तू! अभी–अभी तू नमाज़ की चादर पर पाँव रखकर चली गई?" स्त्री ने मुस्कराकर अकबर की ओर देखा; बोली, "आप नमाज़ पढ़ रहे थे?" अकबर ने कहा, "हाँ।" वह बोली–

नर–राची सूझी नहीं, तुम कस लख्यो सुजान।
कुरान पढ़त बौरे भयो, नहीं राच्यो रहमान।।

राजन्! मैं तो अपने पति के ध्यान में मग्न थी, तुम्हारी चादर मुझे दिखाई नहीं दी; परन्तु तुम तो नमाज़ पढ़ रहे थे, तुम्हें ईश्वर के ध्यान में मग्न होना चाहिए था, तुमने मुझे कैसे देख लिया? प्रतीत होता है कि तुम व्यर्थ ही कुरान पढ़ते रहे हो। प्रभु का प्रेम तुम्हारे हृदय में रचा नहीं।

उस स्त्री ने ठीक ही कहा, नमाज़ के लिए अथवा सन्ध्या और भजन के लिए बैठ जाना ही पर्याप्त नहीं। यह भी आवश्यक है कि ध्यान प्रभु में मग्न हो। अन्तःकरण निर्मल हो। उसके भीतर ईर्ष्या, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार का मल न हो। उसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि मन में चंचलता न हो, अशान्ति न हो। मन तो बन्दर है, इसने शराब पी ली तो और भी चंचल हो जाएगा। बिच्छू ने इसको काट लिया तो चंचलता और भी बढ़ जाएगी। भूत इसके सिर पर सवार हो गया तो चंचलता की सीमा न रहेगी। आशा और निराशा मन के लिए शराब की भाँति हैं। ईर्ष्या और द्वेष बिच्छू के समान हैं। अहंकार वह भूत है जो इसके सिर पर सवार हो जाए तो फिर इसे कुछ भी सूझता नहीं। इन सब वस्तुओं से परे हटाकर, मन को निर्मल करके, सत्य–आहार, सत्य–व्यवहार, सत्य–विचार और सत्याचार का सहारा लेकर तप की भावना से अपार सहन–शक्ति के साथ आगे बढ़ते हुए जो लोग यथार्थ ज्ञान से, ब्रह्मचर्य से शक्ति पाकर आत्मा का अन्वेषण करते हैं, उन्हीं को आत्मा मिलता है। इन चार साधनों को अपनाने से ही आत्मा के दर्शन होते हैं।

परन्तु ये दर्शन होते कहाँ हैं? वहाँ, जहाँ आत्मा और परमात्मा दोनों इकट्ठे हों। जहाँ वे एकत्रित नहीं वहाँ तो दर्शन हो नहीं सकते, और इकट्ठे होते हैं हृदय के भीतर जहाँ आत्मा रहता है, और उसके भीतर ईश्वर का निवास है। यह शरीर केवल शरीर नहीं, यह तो आत्मा का और ईश्वर का मन्दिर है। यदि आप शिव के भक्त हैं तो यह शिवालय है। यदि राम के भक्त हैं तो राम का मन्दिर है। यदि आप कृष्ण के भक्त हैं तो यह कृष्ण का पुण्य निवास है। इतनी पवित्र वस्तु को यदि आप घृणा, शत्रुता और पाप की भावनाओं से मलिन कर देंगे तो यह बुद्धिमत्ता की बात नहीं होगी। जिसकी पूजा तुम करते हो, जिसे तुम ढूँढते फिरते हो, जो तुम्हारा अन्तिम

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

ईश्वर के सर्वश्रेष्ठ नाम 'ओ३म्' के सम्बन्ध में ज्ञातव्य प्राथमिक बातें

● भावेश मेरजा

1. 'ओम्' (Om/Aum) को ईश्वर (परमात्मा, परमेश्वर, ब्रह्म अथवा भगवान्) का सर्वश्रेष्ठ–सर्वोत्तम नाम माना जाता है। 'ओम्' का ठीक से उच्चारण हो सके इसलिए उसे 'ओ३म्' लिखा जाता है। कई बार लोग 'ओम्' को 'ॐ' इस संकेत रूप में भी लिख देते हैं। 'ओ३म्' में जो तीन की संख्या '३' का समावेश है उसका तात्पर्य यह दर्शाने का है कि 'ओ' का उच्चारण प्लुत करना है। ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत–इन तीनों प्रकार से उच्चारण किया जाता है। ह्रस्व उच्चारण करने में जितना समय लगता है, इससे दुगना समय दीर्घ उच्चारण में और तीन गुना समय प्लुत उच्चारण में लगता है। इसलिए 'ओ३म्' में 'ओ' का प्लुत उच्चारण करना है–यही बताने के लिए 'ओ' के पश्चात् '३' संख्या लिखी जाती है। गुजरात में कई बार लोग भूल से 'ओ३म्' ('ओम्') का उच्चारण 'ओरूम्' करते हैं, क्योंकि गुजराती में 'रू' को '३' लिखा जाता है।

2. सत्यार्थ प्रकाश महर्षि दयानन्द जी का विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में चौदह समुल्लास (अध्याय या प्रकरण) हैं, परन्तु इसके प्रथम ही समुल्लास का आरम्भ 'ओ३म्' की व्याख्या से किया गया है। 'ओ३म्' को 'ओंकार शब्द' भी कह सकते हैं। 'ओ३म्' परमेश्वर का सर्वोत्तम, प्रधान अथवा निज नाम है। 'ओ३म्' को छोड़कर परमेश्वर के जितने भी अन्य नाम हैं वे सब गौणिक या गौण नाम हैं। मुख्य नाम तो केवल 'ओ३म्' ही है 'ओ३म्' नाम केवल और केवल परमात्मा ही का नाम है। परमात्मा से भिन्न किसी अन्य पदार्थ का नाम 'ओ३म्' नहीं हो सकता है। यह भिन्न बात है कि कोई व्यक्ति स्वेच्छा से अपना या अन्य किसी व्यक्ति या ईश्वरेतर पदार्थ का नाम 'ओ३म्' रख लेवें!

3. अ–उ–म् – येन तीन अक्षर मिलकर एक 'ओ३म्' समुदाय हुआ है। 'अ' और 'उ' मिलकर 'ओ' होता है। 'ओ' का प्लुत उच्चारण करना है इसलिए इसके आगे '३' लिखा जाता है। इस एक 'ओ३म्' नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं–अनेकानेक नामों का समावेश हो जाता है। अ–कार विराट्, अग्नि, वायु आदि नामों का; उ–कार हिरण्यगर्भ, वायु, तैजस आदि नामों का; और म्–कार ईश्वर, आदित्य, प्राज्ञ आदि नामों का वाचक और ग्राहक है। वेदादि सत्य शास्त्रों में 'ओ३म्' का स्पष्ट व्याख्यान किया गया है। इन शास्त्रों में प्रकरण अनुकूल विराट्, अग्नि आदि सब नाम परमेश्वर ही के नाम बताए गए हैं।

4. यजुर्वेद के 40 वें अध्याय के 17 वें मन्त्र में 'ओ३म्' को परमेश्वर का नाम बताते हुए कहा गया है–**'ओं खम्ब्रह्म'**। अर्थात् जिसका नाम 'ओ३म्' है वह आकाशवत् महान्–सर्वव्यापक है। 'ओ३म्' का मुख्य अर्थ **'अवतीत्योम्'** से यह लिया जाता है कि–ईश्वर रक्षा करनेवाला है। ईश्वर का रक्षा करने के गुण का प्रकाश 'ओम्' नाम से होता है। ईश्वर सर्वरक्षक है–इस सत्य को 'ओ३म्' नाम प्रकट करता है। छान्दोग्य उपनिषद् में कहा है–'

ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत'

अर्थात् जिसका नाम 'ओ३म्' है, वह कभी नष्ट नहीं होता है। उसी की उपासना करनी योग्य है, अन्य की नहीं।

5. कठोपनिषद् (वल्ली 2, मन्त्र 15) का मन्त्र–**"सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति। यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्॥"** बड़ा प्रसिद्ध है। इस मन्त्र में उपनिषत्कार ने इस बात की घोषणा की है कि सब वेद, सब धर्मानुष्ठानरूप तपश्चरण, जिसका कथन और मान्य करते हैं और जिसकी प्राप्ति की इच्छा करके ब्रह्मचर्य आश्रम करते हैं, उसका नाम 'ओ३म्' है।

6. **'सत्यार्थ प्रकाश'** के सप्तम समुल्लास में महर्षि दयानन्द जी ने ईश्वर की उपासना कैसे करनी चाहिए यह बताते हुए योग के अंगों का वर्णन किया है। वहाँ उन्होंने लिखा है कि उपासक को नित्य–प्रति परमात्मा के 'ओ३म्' नाम का अर्थ विचार और जप करना चाहिए।

7. **'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'** ग्रन्थ के उपासना विषयक प्रकरण में महर्षि दयानन्द जी ने योग दर्शन के **'तस्य वाचकः प्रणवः'** (1.27) सूत्र की व्याख्या करते हुए लिखा है–"जो ईश्वर का 'ओंकार' नाम है सो पिता–पुत्र के सम्बन्ध के समान है और यह नाम ईश्वर को छोड़ कर दूसरे अर्थ का वाची नहीं हो सकता। ईश्वर के जितने नाम हैं, उनमें से ओंकार सब से उत्तम नाम है।" इसी प्रकरण में महर्षि ने योग दर्शन के अगले **'तज्जपस्तदर्थभावनम्'** (1.28) सूत्र को उद्धृत कर इसकी व्याख्या करते हुए लिखा है–"इसलिए इसी ('ओ३म्') नाम का जप अर्थात् स्मरण और उसी का अर्थ–विचार सदा करना चाहिए कि जिससे उपासक का मन एकाग्रता, प्रसन्नता और ज्ञान को यथावत् प्राप्त होकर स्थिर हो।" महर्षि ने अष्टांग योग के दूसरे अंग नियम में जिसका निर्देश किया गया है उस 'स्वाध्याय' में 'ओंकार के विचार' का समावेश किया है।

8. **'ओ३म्'** को 'प्रणव' कहा जाता है। **'प्र'** उपसर्ग पूर्वक **'णु–स्तुतौ'** इस धातु से 'प्रणव' शब्द निष्पन्न होता है। इस 'ओ३म्' पद के द्वारा ईश्वर की प्रकृष्ट रूप से–उत्तम प्रकार से स्तुति की जाती है, करनी चाहिए–इसीलिए इसे 'प्रणव' कहते हैं। ईश्वर के केवल एक ही नाम 'ओ३म्' को 'प्रणव' कहा जाता है। उसके किसी भी अन्य नाम को 'प्रणव' नहीं कहा जाता है। 'ओ३म्' को 'उद्गीथ' भी कहा जाता है। छान्दोग्य उपनिषद् आदि में 'उद्गीथ–उपासना' का वर्णन पाया जाता है।

9. यजुर्वेद के 40वें अध्याय के 15 वें मन्त्र में **'ओ३म् क्रतो स्मर क्लिबे स्मर। कृतं स्मर।'** आया है। इसका भाष्य करते हुए महर्षि दयानन्द लिखते हैं–"हे (**क्रतो**) कर्म करने वाले जीव! तू शरीर छूटते समय (**ओ३म्**) इस नाम–वाच्य ईश्वर को (**स्मर**) स्मरण कर, (**क्लिबे**) अपने सामर्थ्य के लिए परमात्मा और स्वरूप का (**स्मर**) स्मरण कर, (**कृतम्**) अपने किये का (**स्मर**) स्मरण कर।"

10. ईश्वर एक द्रव्य, पदार्थ, वस्तु, सत्ता, नामी या वाच्य है। 'ओ३म्' उस ईश्वर का वाचक है, द्योतक है, संज्ञा या नाम है। ईश्वर अभिधेय है, 'ओ३म्' अभिधान है। ईश्वर पदार्थ है, 'ओ३म्' पद है। नाम से नामी का ज्ञान होता है। 'ओ३म्' से ईश्वर के स्वरूप की अभिव्यक्ति–प्रकाश होता है। ईश्वर और 'ओ३म्' नाम नित्य सम्बन्ध है। जब हम कहते हैं कि 'ओ३म्' ईश्वर का नाम है, या वाचक है, तब हम ईश्वर और 'ओ३म्' नाम के बीच पहले से विद्यमान नित्य सम्बन्ध को प्रकट करते हैं; कोई नया सम्बन्ध स्थापित नहीं करते हैं।

'ओ३म्' की अनेकानेक विशेषताएँ हैं। अतः 'ओ३म्' पर प्रगाढ़ आस्तिक्य भाव से–ईश्वर–प्रणिधान पूर्वक चिन्तन–मनन–अर्थ–भावना करने की आवश्यकता है; क्योंकि 'ओ३म्' का विचार ही प्रकारान्तर से ईश्वर–विचार है।

8–17 टाउनशिप,
पो. नर्मदानगर, जि. भरुच,
गुजरात–392015

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥

यजु. 36.18

www.thearyasamaj.org

मेरी नैरोबी यात्रा

● श्री मामचन्द रिवाड़िया

16-9-1978- प्रातःकाल हवन आदि के पश्चात् हम स्टेट हाऊस गए जहाँ पर नैरोबी की जनता नए राष्ट्रपति श्री डेनिवल टी अरब म्वाय के प्रति अपनी स्वामी भक्ति प्रदर्शित करने के लिए उपस्थित थी। भीड़ काफी थी। इस अवसर पर सरदार करतार सिंह सेवक से भेंट हुई जो यहाँ पर इंजिनियर हैं। इस अवसर पर हमने नैरोबी के कई नेताओं के भाषण सुने जो कि सभी स्वैली भाषा में थे। इसके बाद हम पुनः दयानन्द होम वापस आए और भोजन करने के बाद विश्राम किया। संध्याकाल मैं अकेला हाई ब्रिज मार्केट देखने गया। एक बार मैं वहाँ भी गया जहाँ पर लोग शराब तथा बीयर पी रहे थे और वेस्टर्न म्युजिक चल रहा था। यहाँ पर अधिकतर दुकानें गुजरातियों की हैं। मैंने इस बार में बड़ी कोकाकोला की बोतल पी जिसमें 760 मिलीलीटर पानी आता है। इसके बाद मैं पुनः दयानन्द होम वापस आ गया।

17-9-1978- श्रीमती शिवराजरानी, संचालक आर्य समाज, सांताक्रूज, बम्बई ने प्रातःकाल हवन के बाद बहुत ही सुन्दर भजन सुनाया जिसकी सभी ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की। नाश्ता करने के बाद मैं, श्री देवराज जी, मारीशस आर्य समाज के प्रधान श्री मोहनलाल जी मोहित तथा श्री गौतम जी तिलक (मारीशस के संसद सदस्य) डॉ. सन्तराम रामरक्खा जी की कोठी पर उनकी कार में बैठ कर गए। घर का वातावरण शुद्ध और पवित्र था। उनकी धर्म पत्नी भी डॉ. है। उनके तीन बच्चे हैं। एक लड़का तथा दो लड़कियाँ। छोटी लड़की जो 5 वर्ष की है बहुत ही सुन्दर रूप में मंत्रों का पाठ करती है और गायत्री मंत्र का सस्वर पाठ करती है। श्री देवराज ने प्रसन्न होकर 10 शिलिंग का उस बालिका को इनाम दिया। डा. साहब ने हम सभी को जलपान कराया और बाद में अपने प्रांगण में हमारे सामूहिक रूप में चित्र लिए जो टेक्नीकलर में हमें प्राप्त हुए। इसके बाद हम सब दयानन्द होम वापस आ गए। मैंने नैरोबी के सबसे प्रसिद्ध एवं सुन्दर सिनेमाघर में जिसका नाम नैरोबी हॉल है, में 'लुकिंग फार दी गुड बार' (एडल्ट) नामक पिक्चर देखी। रात्रि को सर्वश्री डॉ. सूरज भान जी व पं. सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार का बहुत ही उच्च कोटि का प्रवचन सुना। दक्षिण अफ्रीका से पधारी कुमारी साधना के बहुत ही सुन्दर दो भजन सुने जिसकी सभी ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की।

18-9-1978- हवन आदि एवं नाश्ता के पश्चात् हम बाजार में भ्रमण के लिए निकल गए। करी पाट रेस्टोरेन्ट में कॉफी पी। शाम को नैरोबी में बसे भारतीयों के साथ बाजार घूमा और हैममिल्टन होटल तथा अन्य प्रमुख बाजारों को देखा। एक अफ्रीकन सभा में भाग लिया जहाँ पर केनिया के नए राष्ट्रपति श्री म्वाय का स्वागत किया गया। रात्रि को महेन्द्रपाल हॉल में साउथ अफ्रीका आर्य समाज के प्रधान श्री चिटाई का सारगर्भित भाषण हुआ जिसमें पूज्यनीय भाई परमानन्द तथा श्री भरत सहगल के साउथ अफ्रीका में कार्य की सराहना की।

19-9-1978- प्रातःकाल यज्ञ के बाद मैं, श्री रामनाथ सहगल, श्री दरबारी लाल, श्री भगवान देव, श्री रामलाल मलिक आदि के साथ घूमने के लिए गया और जहाँ पर ये ठहरे हुए थे वहाँ पर दोपहर को विश्राम किया। रात्रि के कार्यक्रम में कनाडा के आर्य समाज के प्रधान श्री ज्ञानचन्द शास्त्री तथा बम्बई आर्य समाज के प्रधान श्री भगवत प्रसाद गुप्ता ने सारगर्भित भाषण दिए तथा मैंने एक कविता का पाठ किया जिसका शीर्षक 'सत्य बोलने का परिणाम' था।

श्री ज्ञानचन्द शास्त्री, कनाडा ने बताया कि यहाँ पर 15 दिन में एक बार सत्संग होता है। उत्साह से कार्य हो रहा है। नैरोबी के आर्य धर्म संघ के प्रधान श्री सत्यदेव भारद्वाज ने बताया कि जब हम आर्य समाज के सम्बन्ध में बोलते हैं तो संसार के लोग हृदय से सुनते हैं। काफी सुलझे हुए तथा अध्ययनशील व्यक्ति प्रतीत हुए। आप पुराने आर्य वीर दल के मंत्री भी रह चुके हैं और गुरुकुल के स्नातक भी हैं।

20-9-1978- आज प्रातःहवन के बाद जलपान लेकर हम शापिंग के लिए रवाना हुए। कुछ सामान आदि खरीदा। आज यज्ञ पर नैरोबी स्थित भारत के राजदूत श्री एन.डी. हक्सर भी अपनी माताजी एवं पत्नी के साथ उपस्थित हुए और यज्ञ में भाग लिया। इस अवसर पर बड़ौदा की श्रीमती प्रतिभा जी के, ऋषि दयानन्द जी से सम्बन्धित ज्ञान की काफी सराहना की गई। श्री उत्तमचन्द जी 'शरर' ने भी अपने विचार रखे। उनका विषय था 'ऋषियों में महान् ऋषि दयानन्द' बहुत ही सुन्दर एवं हृदयस्पर्शी व्याख्यान रहा। कलकत्ता से पधारे पंडित उमाकान्त उपाध्याय ने वैज्ञानिक ढँग से श्री स्वामी दयानन्द जी के महात्म्य पर तथा वेदों पर अपने मधुर विचार रखे। आपने कहा स्वामी दयानन्द मानवमात्र के उद्धारक थे। आपने कहा कि हमारे आर्य नेता अपना कर्त्तव्य पूर्णरूप से नहीं निभा रहे हैं।

21-9-1978- आज यज्ञ आदि से निवृत्त होकर मैं कुछ साथियों के साथ बहादुरगढ़ के निवासी श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता जो कि नैरोबी में स्कूल मास्टर हैं, के घर गया। ये बड़े ही मिलनसार व्यक्ति हैं। एक सुन्दर फ्लैट है जो उन्हें सरकार ने दिया हुआ है। दो हजार शिलिंग इसका किराया है। इन्हें केवल 160 शिलिंग देना पड़ता है। इनको वेतन 4,000 शिलिंग मिलता है और यहाँ पर पूर्णरूप से संतुष्ट हैं। दस बजे विद्वत् परिषद की बैठक हुई जिसकी अध्यक्षता डा. सूरज भान जी, प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने की। आपने कहा कि राजनैतिक लोग देश से भ्रष्टाचार दूर नहीं कर सकते अगर कभी देश से भ्रष्टाचार दूर होगा तो वह आर्य समाज जैसी संस्था ही दूर कर सकती है। इस अवसर पर मारीशस के प्रधान श्री मोहन लाल जी मोहित, सार्वदेशिक महासभा के महामंत्री श्री ओमप्रकाश जी पुरुषार्थी, लन्दन आर्य समाज के प्रधान श्री सी.एल. भारद्वाज, ट्रिनिडाड के प्रधान श्री रामदयाल ने अपने विचार रखे। इस आयोजन के संयोजक पंडित सत्यपाल जी थे। सायंकाल संगीत का कार्यक्रम हुआ जिसमें सुन्दर-सुन्दर संगीत और कव्वाली हुई।

22-9-1978- यज्ञ तथा जलपान आदि से निवृत्त होकर मैं, दोनों उप-प्रधानों के साथ आर्य स्त्री समाज भवन देखने गया। लड़कों और लड़कियों का अलग-अलग स्कूल था। महेन्द्रपाल हॉल में 10 से 12 बजे तक आर्य समाज की उपलब्धियों पर विचार गोष्ठी हुई। इस गोष्ठी में मोरिशस, लन्दन, ट्रिनिडाड, साउथ अफ्रीका, कनाडा तथा भारत के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। 2 बजे से परिचय सम्मेलन मोरिशस के प्रधान श्री मोहनलाल जी मोहित की अध्यक्षता में शुरू हुआ जिसकी संयोजिका श्रीमती सुशीला जी (हैदराबाद) थीं।

दोपहर का भोजन हमने श्री वाई.सी. सोनी नैरोबी निवासी के निवास स्थान पर किया। श्री सोनी जी एक मृदुभाषी एवं व्यवहारकुशल व्यक्ति हैं। हमारे साथ उन्होंने बाजार जाकर कुछ सामान भी खरीदवाया और हमें अपनी कार में बैठाकर नैरोबी के बाजारों की भी सैर कराई। सायंकाल नैरोबी में भारत के राजदूत श्री हक्सर जी अपनी माता तथा पत्नी के साथ आर्य समाज में पधारे। राजदूत महोदय ने कहा-मैं आपका आभारी हूँ कि मुझे आप लोगों ने मिलने का अवसर प्रदान किया। मैं सभी को अपनी ओर से तथा अपने दूतावास की ओर से अभिनन्दन करता हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि आपके यहाँ आने से केनिया और भारत के सम्बन्ध और भी मजबूत होंगे। मेरे योग्य कोई सेवा हो तो अवश्य बताएँ। इस समय वर्षा भी हो रही थी। रात को 9 से 12 बजे तक कवि सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता श्री उत्तमचन्द शरर ने की। कवि सम्मेलन काफी सफल रहा।

23-9-1978- महेन्द्रपाल हॉल में एक बजे ध्वजारोहण का कार्यक्रम हुआ। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर विश्व से पधारे आर्य समाज के समस्त बन्धु उपस्थित थे। श्री वीरेन्द्र जी ने कहा कि यह आर्य समाज का ध्वज विश्व का ध्वज है। यह किसी देश या जाति से सम्बन्धित नहीं है। इसको जहाँ भी चाहो फहरा सकते हो। यह ध्वज विश्व को शांति और अमन का संदेश देता है। 4 बजे केन्याटा हॉल में विश्व धर्म सम्मेलन शुरू हुआ। श्री उमाकान्त उपाध्याय ने सर्वप्रथम वेदमंत्र का पाठ किया। केनिया के आवास एवं समाज कल्याण मंत्री श्री केनरिया का स्वागत नैरोबी के प्रधान श्री गिरधारी लाल सेठी ने किया। इस अवसर पर भारत के हाई कमिश्नर श्री हक्सर, प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा. सूरजभान जी, स्वामी सत्यप्रकाश जी, स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी दयानन्द जी, स्वामी क्षमानन्द जी, श्रीमती सुशीला जी, ओम प्रकाश जी त्यागी, श्री शरर, श्री वीरेन्द्र जी, श्री सत्यव्रत जी विशेष रूप से उपस्थित थे। नैरोबी आर्य समाज के अध्यक्ष श्री सेठी ने आर्य समाज की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। केनिया के आवास मंत्री ने कहा-मुझे प्रसन्नता है कि आर्य समाज विश्व की उन्नति करना अपना धर्म समझता है। स्वामी दयानन्द कहते थे कि हमें ईश्वर को एक मानना चाहिए। श्री हक्सर ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने सामाजिक कुरीतियों और अन्धविश्वासों को दूर करने के लिए बहुत कार्य किया है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आर्य समाज विश्व की भलाई के कार्यों में लगा हुआ है। इस अवसर पर स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती का स्वागत नैरोबी आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री सोनी ने किया। स्वामी सत्यप्रकाश जी ने कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि नैरोबी आर्य समाज ने आर्य धर्म सम्मेलन रखा है। मैं हृदय से उनको धन्यवाद देता हूँ। इस सम्मेलन से विश्व को आर्य समाज की गतिविधियों के सम्बन्ध में जानकारी मिलेगी। स्वामी दयानन्द जी की नीतियों को भी समझने का अवसर मिलेगा। अन्त में नैरोबी आर्य समाज के मंत्री श्री सत्यभूषण भारद्वाज ने आर्य बन्धुओं का धन्यवाद किया और आश्वासन दिया कि नैरोबी स्वामी दयानन्द जी की नीतियों के प्रचार-प्रसार में हर प्रकार का सहयोग देगा।

आज के संयोजक श्री चन्द्रप्रकाश गुप्ता ने कहा कि बदलती हुई परिस्थितियों में हमें समाज के कार्यों को केवल हिन्दुओं की ही संस्था के रूप में नहीं रहने देना चाहिए बल्कि इसे विश्व धर्म के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।

श्री गौतम तिलक, एम.पी. (मारीशस) ने कहा कि मुझे दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि हम नैरोबी में विश्व आर्य सम्मेलन मना रहे हैं लेकिन नैरोबी में किसी अफ्रीकन को आर्य समाजी नहीं बनाया जा सका है। आज विश्व बहुत नजदीक आ गया है। हम आर्य समाजियों को कुछ रचनात्मक कार्यक्रम बनाकर एक नया आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। मुझे दुःख है कि अभी भारत में हरिजनों को जिन्दा जलाया जाता है। हम आर्य समाजियों को इस प्रकार की कुरीतियों को दूर करना चाहिए और संसार का नेतृत्व करना चाहिए। महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने जात-पात को मिटाने के लिए महान् कार्य किया है। हमें उनकी इस शिक्षा को अमल में लाकर कथनी-करनी के भेद को खत्म करना चाहिए।

श्री सी.एल. भारद्वाज (लन्दन) ने कहा कि हमें स्वामी दयानन्द जी की संस्कार विधि का संसार में प्रचार करना चाहिए ताकि संसार को मालूम हो सके कि स्वामी दयानन्द के क्या विचार थे। मैं सार्वदेशिक सभा के पदाधिकारियों

शेष पृष्ठ 07 पर ☞

www.thearyasamaj.org

"आश्रम व्यवस्था में ही समाज का समग्र सुख निहित है"

(सत्यार्थ प्रकाश पंचम समुल्लास के आधार पर)

● अशोक आर्य

2. वानप्रस्थ का प्रयोजन

वानप्रस्थ में दीक्षित होने का प्रयोजन आध्यात्मिक, सामाजिक, शारीरिक तथा वैचारिक स्थिति को परिपुष्ट करना है। ईश्वर की उपासना, शारीरिक उन्नति के लिए योगाभ्यास स्पष्टतः वानप्रस्थ का स्वस्थ प्रयोजन है। पारलौकिक उन्नति के लिए मोह त्याग, भोगों के प्रति अनासक्ति, इन्द्रियसंयम, सादा जीवन बिताना आदि नैतिक प्रयोजन हैं। वनस्थ होकर मुनिवृत्ति धारण कर राग, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकारादि का परित्याग कर अग्निहोत्र, जप, तप आदि के प्रति निष्ठा तथा वेद का स्वाध्याय रखना वानप्रस्थ के प्रयोजन कहे जा सकते हैं।

गृहस्थ में रहते हुए शारीरिक और मानसिक भोगों को भोग तथा इनकी अनित्यता का अनुभव करके अब नित्य आत्मिक सुखों की प्राप्ति के लिए इन्द्रियों और मन को वश में कर जीतकर स्वाध्याय में नित्य संलग्न रहता है। ईर्ष्या–द्वेष को मन से निकालकर सभी के प्रति मित्रता, दया के भाव रखता है, सबके जीवन के कल्याण के लिए जो ज्ञान और अनुभव उसके पास है उससे वह सभी को लाभान्वित करता है। अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए सदा सावधान रहता है, दूसरों से कुछ लेता नहीं है अपितु दूसरों को देता ही देता है।

वानप्रस्थ, नागरिक या ग्रामीण जीवन तथा पारिवारिक सदस्यता त्याग कर वन में रहकर तपस्या में दीक्षित होना है। वनस्थ व्यक्ति गृहस्थ में आसक्त व्यक्तित्व एवं इन्द्रियों की बहिर्मुखी मनः प्रवृत्ति को अन्तर्मुखी बनाने की साधना करे तथा धर्मपूर्वक सदैव वैराग्य का अभ्यास करे।

(संस्कारविधि शोध ग्रंथ–डॉ. रविदत्त शास्त्री पृ. 188)

वानप्रस्थाश्रम जीवन को उन्नत बनाने का आश्रम है। यह खोई हुई सम्पत्ति को अर्जित करने का आश्रम है, उच्च भावनाओं के जागरण का आश्रम है, जीवन–लक्ष्य की ओर बढ़ने का आश्रम है, शिक्षा प्रसार का आश्रम है, त्याग एवं तपस्या का आश्रम है और पवित्र साधना का आश्रम है। वानप्रस्थ से तात्पर्य वन में रहना मात्र नहीं है, वानप्रस्थ तो भावनात्मक परिवर्तन का आश्रम है। भावनात्मक परिवर्तन संयम से या वृत्तियों के उन्नयन से होता है। अति संयम कुण्ठाओं को जन्म देता है। किन्तु वृत्तियों का उन्नयन, विचारों का उदात्तीकरण भावनात्मक परिवर्तन लाता है। अब तक वृत्तियाँ घर–परिवार तक सीमित थीं, अब उन वृत्तियों को अभ्यास द्वारा अपने अड़ोस–पड़ोस ही नहीं, मुहल्ले, ग्राम के लोगों में अपनत्व की भावना का विकास करना है। अब तक परिवार के कल्याण की चिन्ता थी, अब परिवार से ऊपर उठकर अन्यों के कल्याण में अपने जीवन को लगाना है। सर्वहिताय जीवन यापन कर **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** को साकार बनाने की भावनाओं के उन्नयन के लिए वानप्रस्थाश्रम है। "वानप्रस्थाश्रम जीवन के बीज को सुगन्धित एवं ज्ञान से पूर्ण करने का आश्रम है। आज हमारा देश अनेक समस्याओं से ग्रस्त है। हमारे पूर्वजों ने आश्रम व्यवस्था इन समस्याओं के समाधान के लिए ही रखी थी। वानप्रस्थाश्रम समाज की समस्याओं के समाधान का आश्रम है।"

3. वानप्रस्थ का काल

ब्रह्मचर्याश्रमं समाप्य गृही भवेत्, गृही भूत्वा वनी भवेद्, वनी भूत्वा प्रव्रजेत्।

(शत. का. 14)

मनुष्यों को उचित है कि ब्रह्मचर्याश्रम को समाप्त करके गृहस्थ होकर वानप्रस्थ और वानप्रस्थ हो के संन्यासी होवें, अर्थात् यह अनुक्रम से आश्रम का विधान है।

(सत्यार्थ प्रकाश पंचम समुल्लास)

गृहस्थस्तु यदा पश्येद् वलीपलितमात्मनः। अपत्यस्यैव चापत्यं तदारण्यं समाश्रयेत्।।

(मनु.।।6 ।2 ।)

महर्षि मनु, याज्ञवल्क्य तथा कुल्लूक आदि स्मृतिकारों एवं टीकाकारों के अनुसार "पचास वर्ष" की अवस्था पूर्ण करके जब पुत्र को पुत्रोत्पत्ति हो जावे तथा सिर के बाल श्वेत हो जावें तो वन की राह लें। संस्कार विधि के वानप्रस्थ प्रकरण में महर्षि दयानन्द महाराज ने लिखा है कि **"वानप्रस्थ करने का समय 50 वर्ष के उपरान्त है। जब पुत्र का भी पुत्र हो जावे, तब अपनी स्त्री, पुत्र, भाई, बन्धु, पुत्रवधू आदि को सब गृहाश्रम की शिक्षा करके वन की ओर यात्रा की तैयारी करे।"** मनुष्य को शतायु मान, आश्रमों के आयु विभाजन के अनुसार 25–25 वर्ष के चार भाग किए हैं, उस क्रम में वानप्रस्थाश्रम 50 वर्ष की अवस्था के उपरान्त ही है।

किन्तु यह मान्यता सर्वत्र उपयुक्त नहीं हो सकती क्योकि 48 वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालन करने वाला आदित्य ब्रह्मचारी 50 वर्ष में वानप्रस्थी कैसे हो सकता है। परन्तु 25 वर्ष की अवस्था में गृहस्थ में प्रविष्ट होने वाले के लिए यह काल उपयुक्त माना जा सकता है। इसलिए गृहस्थ जब शरीर पर झुर्रियाँ देखे तथा पुत्र का भी पुत्र हो जाए यह मनु की मान्यता अधिक उचित प्रतीत होती है। इस प्रकार वानप्रस्थ ग्रहणकाल पौत्र उत्पत्ति के ठीक पश्चात् मानना उचित है, चाहे आयु 50 या इससे कम ज्यादा ही क्यों न हो।

4. वानप्रस्थ और पत्नी

"वानप्रस्थ धर्म का पालन करने के लिए तपोवन में जाता हुआ मनुष्य, पत्नी को या तो पुत्र के संरक्षण में छोड़ सकता है या अपने साथ ले जा सकता है।"

पुत्रेषु भार्यानिःक्षिप्य वनं गच्छेत्सहैव वा।। (मनु. 6/3)

5. वानप्रस्थियों के कर्त्तव्य

महर्षि मनु ने वानप्रस्थियों के निम्न प्रमुख कर्त्तव्य बतलाये हैं–

1. मृगचर्म या वल्कल पहने, सायं और प्रातः स्नान करे, जटा, दाढ़ी, मूँछ तथा नाखूनों को सदा साफ रखे।
2. खाद्य पदार्थों में से अपनी शक्ति अनुसार बलि (प्राणियों को भोजन और भिक्षा) दे।
3. वन में वेदों का अध्ययन–अध्यापन करे और यदि स्त्री हो तो भी विषय सेवन न करे।
4. नियमानुसार वैतानिक यज्ञ करे।
5. फल–फूल, मूल का भोजन करे और शराब आदि का सेवन न करे।
6. शरीर के सुख के लिए अति प्रयत्न न करे तथा अपने आश्रित व स्वकीय पदार्थों से ममता न करे।
7. नाना प्रकार की उपनिषद् तथा श्रुतियों के अर्थों का विचार किया करे।

(मनुस्मृति षष्ठाध्याय के अनुसार)

8. वानप्रस्थाश्रमी वेदाभ्यास तथा प्रणव का ध्यान करता हुआ ब्रह्मनिष्ठ होवे।

6. वानप्रस्थ तथा भिक्षा

तपः श्रद्धे... 'भैक्षचर्यां चरन्तः (मुण्ड. 1/2/11) के अनुसार वानप्रस्थ को भिक्षाचरण करते हुए वन में रहना चाहिए। इससे पूर्व मनु (6/8) में 'अनादाता' पद का अर्थ 'किसी से कुछ भी पदार्थ न लेवे' ऐसा किया है। इस प्रतीयमान परस्पर विरोध का समाधान यह हो सकता है कि 'वानप्रस्थ को किसी से कुछ न लेना चाहिए', यह सामान्य नियम है। विशेष अवस्था में आपद्धर्म के रूप में भिक्षा ली जा सकती है, परन्तु यह भिक्षा भी वनवासियों से ली जानी चाहिए, ग्राम या नगरवासियों से नहीं–

तापसेष्वपि विप्रेषु याचिकं भैक्षमाहरेत्।
गृहमेधिषु चान्येषु द्विजेषु वनवासिषु।।

(मनु. 6/27)

जो पढ़ाने और योगाभ्यास करनेहारे तपस्वी, धर्मात्मा, विद्वान् लोग जंगल में रहते हों और जो गृहस्थ वा वानप्रस्थ वनवासी हों, जीवन यात्रा चलाने योग्य भिक्षा उन्हीं के घरों से ग्रहण करें।

यह श्लोक वानप्रस्थ संस्कार में संस्कारविधि में भी उद्धृत है।

इस श्लोक पर कुल्लूकभट्ट अपनी टीका में कहते हैं–**'फलमूलासम्भवे च वानप्रस्थेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः प्राणमात्रधारणोचितं भैक्षमाहरेत् तदभावे चान्येभ्यो गृहस्थेभ्यो द्विजेभ्यः,** अर्थात् वानप्रस्थ को यदि जंगली फल–मूल न मिल सकें और प्राण संकट में हो तभी वानप्रस्थ केवल प्राणधारण के योग्य भिक्षा तपस्वी वनवासियों, वानप्रस्थों से लेवे, उनसे भी न मिले तो अन्य वनवासी गृहस्थ द्विजों से लेवे। बहुत ही संकट की स्थिति में मनु का आदेश है–**'ग्रामादाहृत्याश्नीयादष्टौ ग्रासान् वने वसन्'** अर्थात् यदि वन में भिक्षा न मिले तो ग्राम से भिक्षा लाकर खाये, किन्तु आठ ग्रास से अधिक नहीं। तात्पर्य यह कि अत्यन्त आवश्यक होने पर मात्र उदरपूर्ति के लिये भिक्षा द्वारा भोजन करें। संग्रह के लिये नहीं। (सत्यार्थ भास्कर–पू. स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती)

7. आधुनिक संदर्भ में–वानप्रस्थ आश्रम

मानव जीवन यात्रा का तीसरा पड़ाव वानप्रस्थ है। आज मनुष्य ने अपने अज्ञानवश मोहक प्रतीत होने वाले गृहस्थाश्रम को ही अन्तिम पड़ाव समझ लिया है। देखा जाय तो ईश्वरीय व्यवस्था की दृष्टि से गृहस्थ से निकलने के लिए प्रकृति अपने ढंग से संकेत देती है। मनुष्य की शारीरिक शक्ति भोगों को भोगने के लिए समाप्त होने लगती है। नौकरी करने वाले कर्मचारियों को सरकारी विभागों से रिटायर कर दिया जाता है। पुत्र–बहुयें अपने अधिकारों को प्राप्त करना चाहते हैं तथा युवक रोजगार प्राप्त करना चाहते हैं। परन्तु आज के समाज में एक बीमारी उत्पन्न हो गई है कि 60–70 वर्ष तक भी कोई न तो गृहस्थ आश्रम छोड़ना चाहता है और न सर्विस से रिटायर होना चाहता है। जबकि प्रेय से श्रेय की ओर

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

"गोवर्धन–परिक्रमा"

(वेद प्रदर्शित पयक्रम–प्रदक्षिणा)

● देव नारायण भारद्वाज

पौराणिक धारणाओं से हटकर तथ्यान्वेषी विचारकों के अनुसार ब्रज–क्षेत्र में राजस्थान की ओर से भीषण बाढ़ का पानी आकर भयंकर ध्वंस करता था। इससे सुरक्षा के लिये ब्रज–नायक श्री कृष्ण ने ब्रजवासियों को किसी तेज तर्जनी से नहीं, प्रत्युत अपनी सर्वप्रियता के आकर्षण से कृश कनिष्ठा के संकेत मात्र से एकत्र करके, वहाँ पर जो बाँध बनवाया था, उसी के अनुरक्षण–निरीक्षण के लिए परिभ्रमण हेतु प्रेरित किया था। अब उसी को गोवर्धन पर्वत मानकर अनेक मठ–मन्दिर–आश्रम तथा गोमुख कन्दरा बना कर पञ्च कोसी से चौरासी कोसी परिक्रमायें की जाती हैं। अब तो रात्रि–दिन भजन–कथा मण्डली बारहों महीने चलती रहती हैं। अपने राजकीय सेवा काल में वहाँ स्थित खण्ड स्तरीय कार्यालयों के निरीक्षण हेतु जाता रहा हूँ, किन्तु परिक्रमा पथ पर कभी अग्रसर नहीं हुआ। अब तो वहाँ के एक महन्त स्वामी गणेश पुरी जी महाराज अलीगढ़ परिभ्रमण पर आते हैं तो 'वरेण्यम्–कुटी' पर पधार कर पेयजल प्रबन्ध के लिए सहयोग राशि लेकर परिवार को पुण्य प्रसाद दे जाते हैं।

आइए गोवर्धन से परिचय कर लें। विनाशक बाढ़ को रोकने से गोवर्धन, अर्थात् भूमि की वृद्धि–संवृद्धि होती है। भूमि के रक्षण से गो अर्थात् गायों का पालन होता है। खेती–बाड़ी एवं गोपालन से, मानव गोस्वामी–अपनी इन्द्रियों व वाणी का अधिकारी बनता है, और रवि व ज्ञान की किरणों को ग्रहण कर सन्मार्ग द्वारा मोक्षगामी बनता है। पता चला कि अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय कोष को सचेष्ट बनाकर वह आनन्दमय कोष का अधिकारी बनता है। सारांश यह कि इन सब गो–सम्पदाओं को समेटने वाली मानव योनि ही गोवर्धन के स्वरूप है, और इसके समुत्कर्ष के लिये जो मानसी गंगा में गोते लगाकर प्रदक्षिणा की जाती है, वही वास्तविक गोवर्धन परिक्रमा है। भौतिक रूप में भी जहाँ यह प्रतीक गंगा उपस्थित है, जिसे हम मानस में उतार कर आगे गोवर्धन परिक्रमा पर बढ़ते हैं।

अथर्ववेद के 19वें काण्ड सूक्त 18 में 10 मन्त्र हैं। वे सभी दसों दिशाओं में इस गोवर्धन–परिक्रमा हेतु पथ–प्रदर्शन करते हैं। सुविधा यह है कि तीन शब्दों को छोड़कर सभी मन्त्रों की शब्दावली समान है। अस्तु प्रथम मन्त्र को आधार बनाकर दसों मन्त्रों की मनसा–वीथिका बनाई जा सकती है। देखिये–

"अग्निं ते वसुवन्तमृच्छन्तु। ये माघायवः प्राच्यां दिशोऽभिदासात्।।"

अर्थात् वसुपति अग्रणी प्रभु की ओर हम पहुँचने की इच्छा से आगे बढ़ते हैं, तो पूर्व दिशा में हमारा अशुभ चीतने वाले हमको सता कर क्षीण करने को उद्यत होते हैं, तो अग्नि प्रभु हमको आगे बढ़ाने की शक्ति देते हैं। इसी प्रकार सभी दिशाओं की बाधाओं को पार कर साधनाओं को सफल बनाने का सन्देश इस सूक्त से प्राप्त होता है, जिसे निम्न सारणी में सूची बद्धकर सरणी–पद्य संदर्शित किया जाता है।

गोवर्धन–प्रदक्षिणा–पथ

मन्त्र क्रम	प्रदक्षिणा पथ	लक्ष्य	पथरोधक असुरवृत्तियाँ	पथशोधक सुर शक्तियाँ	संरक्षक देव	देव का आदर्श	प्रत्यक्ष निदर्शन
1	पूर्व सामने की दिशा	वसुवन्तम् संसार में अपना स्थान बने	अज्ञान की अधीरता	ज्ञान की धृति	अग्नि	प्रमाद त्याग कर उठना	माता–पिता– गुरु –ईश्वर के संरक्षण में सजग होकर प्रगति करना
2	आग्नेयी पूर्व–दक्षिण मध्य दिशा	अन्तरिक्षवन्तम् हृदय की भावना	असहिष्णुता	क्षमा सहनशीलता	वायु	प्रवाह में स्थिर होना	संकल्पवान होकर वायु के प्रवाह में अडिग रहकर लक्ष्य की ओर चलना
3.	दक्षिण दक्षता की दिशा	रुद्रवन्तम् पीड़ा सहकर भी मस्तिष्क की दृढ़ता रखना	शिथिलता व अन्यमनस्कता	दम मन को दुराचरण से रोकना	सोम	ब्रह्मचर्य से सोम का रक्षण करना	संकल्प दृढ़ी होकर सदाचरण का पालन करना
4	नैऋत्य दक्षिण–पश्चिम की मध्य दिशा	आदित्यवन्तम् सूर्य के समान समयबद्धता एवं उजागर रहना	विश्वासघातक अन्धकार में छुपाकर स्वार्थ साधन करना	अस्तेय छल कपट चोरी से बचना	वरुण	सब को आवृत करने वाला सर्वोत्तम सर्वद्रष्टा, प्रभु या प्रशासक	दुर्गुण त्याग श्रेष्ठ गुणधारक सर्वप्रिय बनना
5	पश्चिम पीछे की दिशा	द्यावापृथिवीवन्तम् मस्तिष्क से लेकर शरीर के सर्व अवयवों की स्वस्थता	अशौच व मलिनता से घृणा	शौच राग द्वेष पक्षपात त्यागना भीतर –बाहर की शुद्धि	सूर्य	अपनी प्रखर किरणों से बाहर–भीतर सृजन करता वेदोपदेशक भी प्रोत्साहन करता	जगत में गुण सृजन व धनोपार्जन करते रहना
6	वायव्य पश्चिम–उत्तर के मध्य	ओषधीमती पोषक व सुधारक शक्ति संग्रहण	इन्द्रियनिग्रह वासनाओं की ओर भटकना	इन्द्रिय निग्रह दुराचरण से रोकना	अपः	सुकर्म निष्ठा सरसता प्रदान करती है	सुकर्मों में संलग्न रहने से इन्द्रियाँ वश में रहतीं।
7	उत्तर उन्नति की दिशा	सप्तऋषीवन्तम् जिह्वा, नाक, नेत्र, कान, त्वचा, मन, बुद्धि ज्ञान स्रोत सम्पन्नता	मतिमन्दता इन्द्रियों का दुरुपयोग करना	धीः मादक द्रव्य त्याग योग से सुबुद्धि की वृद्धि	विश्वकर्मा	रचनात्मक क्रियाशीलता में व्यस्त रहना	सुरस, सुगन्ध, सुदृष्टि, सुशब्द, सुस्पर्श, मनन व अवधारण से शुभ कर्म करना
8	ईशान उत्तर–पूर्व के मध्य की दिशा	मरुतवन्तम् प्राणवायु की भाँति सान्त्वना	अविद्या अन्धकार में दम घुटना	विद्या सा विद्या या मुक्तये बन्धन वेदना से छुड़ाना	इन्द्रम्	ऐश्वर्य एवं शक्ति मत्तावान होकर (मा+रुत) निर्बल को रोने से बचाना	दमघोटू स्थान पर जैसे मरुत वायु प्राण बचाती है वैसे ही शक्तिशाली इन्द्र राजा निर्बल, निर्धन की रक्षा करता है।
9	ध्रुवा नीचे भूमि की ओर की दिशा	प्रजननवन्तम् सुप्रजा एवं सन्ततिवान होना	असत्य एवं भ्रम से बाधा करना	सत्य जैसा जो हो उसको वैसा समझना, बोलना और करना	प्रजापति	परमेश्वर, राजा एवं पिता की भाँति प्रजा व सन्तान का पालन करना	घर, समाज एवं राष्ट्र में मात्र जन्म या जनन करने वाली जनता नहीं अपितु प्रकृष्ट रूप से प्रजा का निर्माण हो
10	ऊर्ध्वा ऊपर आकाश की ओर की दिशा	विश्वदेववन्तम् घर–समाज–राष्ट्र ही नहीं, विश्व के लिए दैवीय उपकारी देन प्रदाता होना	क्रोधी व्यक्ति अपनी देन देकर भी देव नहीं दानव बनता है	अक्रोध फलों से लदा वृक्ष झुककर पूज्य बन जाता है	बृहस्पति	आकार–प्रकार से बड़े होने की अपेक्षा बड़प्पन का अधिक महत्व है	बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर। पन्थी को छाया नहीं फल लागें अति दूर

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

www.thearyasamaj.org

महर्षि देवदयानन्द एक सच्चे गुरु थे

● खुशहाल चन्द्र आर्य

सच्चा गुरु वही होता है जो अपने शिष्यों को अच्छी शिक्षा देकर अज्ञान से ज्ञान की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, कुपथ से सुपथ की ओर ले जाता है। अन्धविश्वास, पाखण्ड व मूर्तिपूजा से हटाकर ईश्वर की सच्ची उपासना जो सन्ध्या, हवन, सत्संग व अष्टांग योग है, उनकी ओर ले जाता है। इन कार्यों में देव दयानन्द ने अपनी एक विशेष अच्छी व अलग ही पहचान बनाई थी, यह सद्गुरु श्रृंखला आदि सृष्टि से चली आ रही है और सृष्टि के अन्त तक चलती रहेगी। कारण मनुष्य एक अल्पज्ञ प्राणी है, उसको सही रास्ता दिखाने के लिए अपने से अच्छे एक सच्चे गुरु की आवश्यकता पहले भी सदा रही है और आगे भी रहेगी।

जैसा कि मैंने लिखा कि सद्गुरु की श्रृंखला सृष्टि के आदि से चली आ रही है। देवों के देव, पिताओं के पिता और गुरुओं के गुरु ईश्वर ने सृष्टि के आदि में, सृष्टि की पूरी रचना करने के बाद मनुष्यों की उत्पत्ति अनेक नौजवान स्त्री–पुरुषों के रूप में की जिससे आगे सृष्टि चलती रहे। तभी ईश्वर ने मनुष्यों को सही मार्ग दिखाने के लिए यानि धर्म, अर्थ, काम को धर्मानुसार करते हुए मोक्ष जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है, उसे प्राप्त करने के लिए सब से अधिक पवित्र आत्मा वाले चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा थे, उनके श्री मुख से चार वेदों को जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं, उनको उच्चारित करवाया। वह वेद–ज्ञान उपस्थित सभी पुरुषों व स्त्रियों ने सुना, परन्तु उनमें भी ब्रह्मा जो सर्वश्रेष्ठ ऋषि थे, जिनकी स्मरण शक्ति बहुत तेज थी, उन्होंने इन चारों वेदों को कठस्थ कर लिया और उपस्थित लोगों को सुनाते रहे फिर यह कर्म पिता, पुत्र को, गुरु शिष्य को सुनाना लाखों वर्षों तक चलता रहा। जब स्याही, कलम, दवात, कागज का आविष्कार हो गया तब इन चारों वेदों को पुस्तकबद्ध कर दिया, जो अभी तक चलते आ रहे हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि सृष्टि के आदि से मनुष्य–मात्र के कल्याण के लिए वेदों का ज्ञान देने वाला ईश्वर सर्व प्रथम सद्गुरु हुआ। फिर ब्रह्मा ने उन वेदों को कण्ठस्थ करके आम जनता को सुनाया इसलिए दूसरा सद्गुरु ब्रह्मा हुए। तत्पश्चात् त्रेता में रामायण काल में हमें दो सद्गुरु दिखाई देते है जिनके नाम हैं वशिष्ठ व विश्वामित्र जिन्होंने रावण, कुम्भकरण जैसे बलशाली व अन्यायी राक्षसों का संहार करने के लिए एक योजनाबद्ध तरीके से श्री राम और लक्ष्मण को राजा दशरथ से लेकर उन्हें धनुर्विद्या तथा अन्य विद्याएँ सिखाईं जिससे वे रावण को उसके पूरे परिवार सहित मारने में सफल हुए जिससे आम जनता को सुखी बनाया और ऋषि–मुनियों के यज्ञों को अपवित्र होने से बचाया। इसलिए ये भी सद्गुरु की श्रेणी में आते हैं। फिर हम जब आगे बढ़ते हैं तो द्वापर में महाभारत के समय गुरु दिखाई देते हैं। गुरु द्रोण और गुरु कृपाचार्य पर इनको हम सद्गुरु की श्रेणी में नहीं गिनते कारण इन्होंने अपने स्वार्थ के लिए अपने कर्त्तव्य को त्याग कर पापी दुर्योधन का साथ देकर अधर्म का काम किया। तत्पश्चात् भारत के इतिहास को जब हम सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन करते हैं तो चन्द्रगुप्त मौर्य के सद्गुरु चाणक्य का नाम आता है जिसने चन्द्रगुप्त जैसे योग्य बच्चे को सुशिक्षित व शस्त्र विद्या में निपुण करके एक अच्छा योद्धा बनाकर पापी राजा महानन्द का वध करवा कर चन्द्र गुप्त को राजा बनाया और जनता को सुखी बनाया। इसके बाद हम आगे बढ़ते हैं तो शेर शिवाजी के सद्गुरु रामदास पर हमारी दृष्टि पड़ती है जिसने शेर शिवाजी को युद्ध विद्या में निपुण करके औरंगजेब जैसे पापी बदशाह के राज्य को नष्ट करवाया। फिर हम आगे चलते हैं तो हमारी दृष्टि उस महान् सद्गुरु चक्षुविहीन स्वामी विरजानन्द पर पड़ती है जिसने अपने योग्य शिष्य बाल ब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द को तीन वर्ष गोद में रखकर उसको वेदों की कुंजी प्रदान की जिससे महर्षि दयानन्द ने जो उस समय आचार्य सायण व उब्बट द्वारा वेदों के जो गलत और अश्लील भाष्य किए थे उनको गलत साबित करके, वेदों के सही भाष्य करके विश्व में वेदों का प्रकाश किया। महर्षि दयानन्द ने न केवल वेदों का सही भाष्य ही किया बल्कि अपने सद्गुरु विरजानन्द को गुरुदक्षिणा के रूप में वचन दिए थे, उनको पूरी उम्र उन वचनों का पालन करते हुए विश्व में जो अज्ञान के कारण अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला था उसको रोकने की किसी में हिम्मत नहीं थी, उस समय देव दयानन्द ने अपनी जान को जोखिम में डाल कर वेदों के सही अर्थ बतलाकर इस अन्धविश्वास व पाखण्ड को मिटाया। और दुःखियों, असहायों व निर्बलों का सहारा बने। गाय की चीत्कार को सुना और विधवाओं के आँसू पौंछे तथा आजादी का शंख नाद फूँका। इस प्रकार देश में नव जागृति का संचार किया।

महर्षि दयानन्द नव जागरण के पुरोधा कहलाए जाते हैं। जब देवदयानन्द अपने सद्गुरु विरजानन्द की कुटिया छोड़कर अपने कार्य क्षेत्र में उतरे, उस समय देश की स्थिति बड़ी ही नाजुक व भयावह थी। महाभारत के भीषण युद्ध में सभी विद्वान्, योद्धा, आचार्य, पुरोहित आदि के मारे जाने से वेद ज्ञान प्रायः लुप्त हो गया था जिससे देश में अज्ञान व अविद्या, के फैलने से अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला हो गया था। जाति कर्म से न मानकर जन्म से मानी जाने लगी थी। स्वार्थी पण्डितों ने अपना पेट भरने के लिए अनेक मत–मतान्तर चला दिए थे, जिससे कम पढ़े–लिखे व अविद्वान् भी विद्वान् समझे जाने लगे थे। ईश्वर की सच्ची उपासना जो सन्ध्या, हवन, सत्संग व अष्टांग योग है, इनको छोड़ कर उन स्वार्थी अधकचरे पण्डितों ने राम और कृष्ण को ईश्वर का अवतार मानकर उनकी तथा अन्य बनावटी व निरर्थक देवी–देवताओं की मूर्त्ति बनाकर उनकी ही पूजा करवाने लगे थे। और उसी को ही मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बताया जाने लगा था। कृष्ण के अश्लील व भद्दे चित्र का वर्णन करके देश में अश्लीलता का ताण्डव नृत्य हो रहा था। ऐसी स्थिति में देव दयानन्द ने एक सद्गुरु और एक अच्छे वैद्य के रूप में वेदों का पुनः प्रकाश करके देश को नई दिशा प्रदान की जिससे देश में नव जागृति आई और देश वेदों के प्रकाश से प्रकाशित होकर पुनः उन्नति व समृद्धि की ओर अग्रसर हुआ। इसलिए देव दयानन्द जिसने देश को सही मार्ग पर चलना सिखाया और अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने के लिए वेदों की ओर लौटो का आह्वान् किया। जिससे देश में नव चेतना आई, इसलिए देव दयानन्द को हम सच्चा गुरु कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इसीलिए महर्षि अरविन्द ने कहा था कि–

मैं हिमालय की अनेक चोटियाँ देख रहा हूँ जिनके ऊपर देश के महापुरुष बैठे हुए हैं।

जो चोटी सबसे ऊँची है, उसके ऊपर महर्षि देव दयानन्द बैठे दिखाई दे रहे हैं।।

किसी कवि ने ठीक ही कहा है:–

सौबार जन्म लेंगे, सौ बार फ़ना होंगे,
एहसान! दयानन्द के, फिर भी न अदा होंगे।

गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स,
180 महात्मा गान्धी रोड (दो तल्ला)
कोलकता–700007
फोनः 22183825 (033)

☞ *पृष्ठ 04 का शेष*

मेरी नैरोबी यात्रा...

से प्रार्थना करता हूँ कि वे अनेक भाषाओं में आर्य समाज का साहित्य छापें ताकि संसार जान सके कि स्वामी दयानन्द जी ने विश्व हित में क्या–क्या विचार रखे थे।

श्री ज्ञानचन्द शास्त्री (कनाडा) ने बताया कि 12 मई 1957 को वहाँ पर आर्य समाज की स्थापना हुई। शुरू में उन्हें किस प्रकार का कष्ट झेलना पड़ा उसका उदाहरण उन्होंने इस प्रकार दिया–"मैं अपने घर में यज्ञ कर रहा था। थोड़ी देर में पुलिस आ गई। मैं बाहर गया देखा कि फायर ब्रिग्रेड की मोटर खड़ी हुई है। पूछने पर मालूम हुआ कि वह आग बुझाने आए हैं। क्योंकि कनाडा में सरकार द्वारा निर्देश दिया हुआ है कि कहीं से भी धुआँ निकले तुरन्त फोन करो। अतः हमने केवल ज्योति जलाकर हवन करने की पद्धति को ही अपनाया।" आपने कहा कि हमें केवल खंडन ही नहीं करना चाहिए मण्डन की ओर भी पूरा–पूरा ध्यान देना चाहिए।

श्री गोसाई (ट्रिनिडाड)–यहाँ पर आर्य समाज का बहुत लगन से कार्य कर रहे हैं। नवयुवक कार्यकर्त्ता हैं और वहाँ के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री भी हैं।

श्री जुटई (साउथ अफ्रीका)–आपने कहा कि हमारे देश में महात्मा गांधी, भाई परमानन्द, भक्त सहगल आदि महानुभाव पधारे और उनकी प्रेरणा से ही हम आर्य समाज का कार्यक्रम बड़ी लगन से कर रहे हैं। आपकी सुपुत्री साधना बहुत ही मधुर स्वर में भजन गाती हैं। उन्होंने महर्षि स्वामी दयानन्द जी के ऊपर कई भजन इस सम्मेलन में सुनाए।

स्वामी ओमानन्द जी ने कहा कि हमें अच्छे–अच्छे उपदेशक पैदा करने चाहिए और उनके भरण–पोषण के लिए भी हमें सुविधाएँ प्रस्तुत करनी चाहिए ताकि वे निष्ठापूर्वक एकाग्रचित्त होकर आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार में पूर्ण रुचि लेकर कार्य कर सकें। छात्रावास नये ढंग से बनने चाहिए ताकि इसमें प्रवेश के लिए लोगों की उत्सुकता बढ़े।

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने प्रस्ताव रखा जिसमें कहा कि अब हमारा कार्य हिन्दी भाषा में ही नहीं रहना चाहिए बल्कि विश्व की सभी भाषाओं में कार्य होना चाहिए। स्वामी जी के प्रस्ताव का समर्थन डा. सूरजभान जी तथा वीरेन्द्र जी ने किया। अन्त में शन्ति पाठ के बाद सम्मेलन आनन्दपूर्वक सम्पन्न हो गया।

जब डा. सूरजभान जी बोलने के लिए मंच पर खड़े हुए तो उनके विदेशों में बसने वाले बहुत से शिष्यों ने, जो कि समय–समय पर उनसे शिक्षा ग्रहण किया करते थे, उनका चरण छूकर आशीर्वाद लिया। उन शिष्यों में डा. साहब के लिए बड़ी श्रद्धा थी। डा. साहब ने अपने भाषण में कहा कि लोगों को अपने सम्मान का ख्याल न रखते हुए आर्य समाज के उत्थान में लग जाना चाहिए। उनके इस विचार का सभी ने स्वागत किया।

क्रमशः....

आर्य समाज टैगोर गार्डन
नई दिल्ली – 110027
मो. – 09212003162
फोनः 08700101500

www.thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 06 का शेष

"गोवर्धन-परिक्रमा"...

सारणी-संचरण

(1) **संरक्षक से धैर्य, धैर्य से संसार में सम्यक स्थान बनता**-धरती पर खूब स्थान घेर लेना समुचित नहीं, जितना स्थान पास है उसको सुविधा-सम्मान पूर्ण बनाना ही बसना है। भारत के प्रमुख धनी के घर पुत्र जन्म हुआ। बड़ा समारोह एवं प्रह्लाद का आयोजन हुआ। बढ़ते बढ़ते किशोर वय तक पहुँचते पहुँचते उसका आकार विशाल और भार कुन्तल से अधिक हो गया। वह वैक्तिय का स्रोत तो बना, किन्तु सन्तान सुलभ दुलार के द्वार उसके लिए बन्द हो गये। प्रभूत धन व्यय करके एक आहार विशेषज्ञ महिला (डायटीशियन) के अनुरक्षण में रखा गया। बालक व परिवार ने धैर्य बनाये रखा। वर्षों के उपचार के बाद अपने सामान्य स्वरूप में आया, और प्यार-दुलार ही नहीं धन-अम्बार का उत्तराधिकार प्राप्त कर वह अब 'वसुवन्तम्' का अलंकार प्राप्त कर चुका है।

(2) **घृणा के ऊपर मनोबल की प्रेरणा बालक को अडिग बनाती**-नगर में एक आधुनिक प्रतिष्ठित विजडम पब्लिक स्कूल है, जिसमें प्रवेश के लिए अभिभावक लालायित होकर पंक्तिबद्ध रहते हैं। इसके विपरीत समृद्ध शिक्षा संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष श्री पी. के. गुप्ता ने दो बालक स्वयं गोद लेकर उनका शिक्षण-पालन सुनिश्चित कर दिया है। दोनों के माता-पिता अभावग्रस्त हैं। उनमें से बालक का नाम देव वार्ष्णेय है जो भयंकर रूप से पोलियोग्रस्त व दिव्यांग है, बालिका का नाम शायना है जिसकी माँ ग्रह सेविका है। बालक अपने शारीरिक कला-प्रदर्शन व बालिका अपनी भाषण शैली से सभा का मन मोह लेते हैं। अभी से उन्हें प्रदर्शन हेतु दूर-दूर से आमन्त्रण मिलते हैं। वे संकल्पवान होकर प्रेम-प्रतिष्ठा हेतु अग्रसर हैं।

(3) **संयम-सोम रक्षण की दृढ़ता से मस्तिष्क प्रकाशित होता**-बालक सो न जायें, तो उनकी चोटी ऊपर बाँध दी जाती थी, वे अपना पाठ कण्ठस्थ करते, निद्रा का झोंका, उनकी चोटी के झटके से थमता और पाठ-स्मरण की प्रक्रिया चल पड़ती। यही रुद्ररूप की कठोरता उन्हें महान बना देती। भगवद्गीता को कण्ठस्थ करने की प्रतियोगिता में किशोरवय बाला मरियम सिद्दीकी ने न केवल प्रथम स्थान पाया, प्रत्युत सम्पूर्ण देश में प्रीति-कीर्ति की स्वामिनी बनकर प्रधानमन्त्री व अन्यान्य उच्च स्थानों में लाड़-दुलार प्राप्त कर जीवन सार्थक कर लिया। जिसका मस्तिष्क जाग्रत हो जाता है, वह मनुष्य जगत् में प्रकाशित हो उठता है।

(4) **समयबद्धता व अवसर की सजगता श्रेष्ठ गुण वरीयता दिलाती**-लेखक को वेद प्रचार की धुन थी। आकाशवाणी से कृषि वैज्ञानिक विषय वार्ता हेतु बुलाया जाता। दस मिनट निर्धारित होते। विषय सूचक वेद मन्त्र से वार्ता प्रारम्भ करता। निश्चित समय निर्धारित अवधि का ध्यान रखना होता। एक प्रसारण अधिकारी बदल कर नये आ गये। उन्होंने कहा कि वेद मन्त्र किसान क्या जाने? इसे छोड़कर विषय पर वार्ता करें। लेखक ने प्रारम्भ में मन्त्र न पढ़ कर अन्त में उसे जोड़ कर वार्ता को पूरा कर दिया। बाद में प्रसारण अधिकारी मित्र बन गये। रंग लगा न फिटकरी रंग चोखा आ गया। अवसर यह था कि लेखक पद की गरिमा के कारण बुलाया जाता था, और समयबद्धता यह थी कि निर्धारित अवधि में विषय व मन्त्र कृषक उपयोगी बना रहे।

(5) **गुण सृजन से धनोपार्जन एवं कुल रक्षा** – लोक प्रसिद्ध महागायक ने अपनी एकमात्र सन्तान बेटी को भजन गायिका बना दिया। वृद्ध गायक गीत गाते-गाते घोर खाँसी के कारण मौन हो गया। बेटी ने उसी गीत को गाकर अपना स्थान बना लिया। सूरज जैसे भीतर-बाहर किरण करों से सृजन करता है वैसे ही बेटी ने अपने पिता के सृजन को अपनाकर निज वंश व पिता के अंश दोनो को अमर बनाकर शरीर व मेधा दोनों को प्रतिष्ठित बना दिया। जीवन को सुयश सफलता से भर दिया।

(6) **सुकर्मों में संलग्नता से शोधन-पोषण होता**-ब्राजील के प्रमुख नगर रियो डी जीनियरो में विश्व प्रसिद्ध ओलम्पिक का आयोजन हुआ जो अगस्त 2016 में पूर्ण हो गया। इसमें 5000 मीटर दौड़ के क्वालीफाइंग चक्र में न्यूजीलैंड की निकी हैंबलिन एवं अमेरिकी धाविका एबेंडा गोस्टिनो दोनों को चोट आई। हैंबलिन को गोस्टिनो ने उठाया, सहारा दिया, दौड़ने हेतु प्रोत्साहित किया। वे दौड़ जीत नहीं पायीं, किन्तु दोनों को खेल भावना के प्रदर्शन हेतु विशिष्ट पदक से सम्मानित किया गया। इससे पहले ओलम्पिक के 120 वर्ष के इतिहास में केवल 17 व्यक्तियों को ये पदक मिले हैं। इसीलिए कहा है कि सदगुण-सुकर्म सदैव जीवन सुधार एवं शक्ति संग्रहण करते रहते हैं।

(7) **सद्बुद्धि एवं सौहार्द सदा सम्मान प्रदायक होते** – जीत एवं हार के मध्य जो सह सम्बन्धक तत्व है वह है शोणित को स्वेद बिन्दुओं में बदलने की तरलता। अन्तिम स्पर्धा में स्पेन की मरीन को स्वर्ण एवं भारत की पीबी सिन्धु को रजत मिलता है किन्तु इन दोनों से हटकर वहाँ जो दृश्य उपस्थित होता है वह सद्बुद्धि एवं सौहार्द का शाश्वत स्वरूप है। मरीन जीत के बाद भी जमीन पर लेट जाती है और भावुकता के इस क्षण में अश्रु तरल हो जाती है और सिन्धु असीम स्नेह से उसे उठाती एवं सहारा देती है। सौहार्द से बड़ा स्वर्ण कौन हो सकता है।

(8) **ऐश्वर्य एवं शक्ति वान वही जो निर्बल को सान्त्वना देता**-अनेक पुत्र-बहू वाली विधवा वृद्धा को एक पुत्र वधू ने उसके फटे पुराने कपड़ों सहित कूड़े के ढेर पर पटक दिया। कोई कबाड़ी तरुण अपने साथ ले गया। वृद्धा के गुदड़ों व कपड़ों में अनेक स्वर्ण मुद्रायें एवं अशरफियाँ निकल आयीं। उसका जीवन धन्य हो गया। उसने वृद्धा को स्वच्छ-स्वस्थ कर सुखी बना दिया, स्वयं ससम्मान रह कर दान-पुण्य करके, प्रतिष्ठित हो गया। सार्वजनिक सम्मान में वृद्धा को उच्चासन पर विराजमान देखकर अब उसके सगे पुत्र भी इस दत्तक पुत्र के भाग्य को सराह रहे थे और अपने दुर्भाग्य पर पश्चाताप कर रहे थे।

(9) **सत्य व्यवहार से आधार दृढ़ होता**-राजा के सत्य-सदाचरण का अनुकरण कर प्रजा भी परस्पर उपकारी बनती है। ये पंक्तियाँ कृष्ण जन्माष्टमी पर अंकित की जा रही हैं। निरंकुश राजा कंस ने अपने बहन-बहनोई देवकी-वसुदेव को जेल में बन्द कर दिया। फलस्वरूप प्रहरी-सेवकगण उसके अतिशय अत्याचारों के मन ही मन विरोधी हो गये और रातों रात जेल के फाटक खोल कर बाल कृष्ण को गोकुल पहुँचाने में सफल हुए जिसने अपने ही मामा कंस का नाश कर दिया। इसी सत्य साधना से वसुदेव-देवकी ही नहीं यशोदा-नन्द भी अमर हो गये। भारत योगेश्वर कृष्ण को पाकर विश्व पूज्य बन गया। आप्त पुरुष कृष्ण का यही आदर्श वन्दनीय है।

(10) **बड़े की अपेक्षा बड़प्पन से संवर्द्धन होता है**-जिस आदमी का भरोसा स्वयं पर नहीं है, उसकी अच्छाई भी स्थिर अच्छाई नहीं होती। चुटकी भर से उसकी अच्छाई बुराई में बदल सकती है। सड़क हादसे में स्मृति खो चुके सैनिक को मृत मान कर उसकी पत्नी को पेशन बाँध दी गयी। दूसरे सड़क हादसे में सात साल बाद उसकी स्मृति लौट आई और वह अपने परिवार से आ मिला। मानव शरीर में सबसे बड़ा बृहस्पति स्वरूप उसका मस्तिष्क ही है जो उसे हीन या महान बनाता है। लौटते हैं रियो ओलम्पिक की ओर, स्त्री-पुरुषों से भरे पूरे दल की भारत-ध्वज वाहिका का सम्मान विश्व स्तर पर किसे मिला? अल्प आयु सुकुमारी कन्या साक्षी मलिक को, क्योंकि उसने कांस्य ही सही-प्रथम पदक जीता। उसके पिता व माता रोजी रोटी कमाने को बाहर रहते थे। साक्षी अपने दादाजी के साथ पली व बड़ी हुई। पहलवान दादा की मान प्रतिष्ठा से प्रभावित साक्षी ने पहलवान बनने का प्रण ले लिया। पहलवानी की शक्ति से अधिक क्षेत्रीय भक्ति प्रतिष्ठा एवं दादाजी की लोकप्रियता के बड़प्पन ने उसे पहलवान बना दिया। अब वह हरियाणा के बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ-बेटी खिलाओ की ब्राण्ड एम्बेसडर है। ब्राण्ड अम्बेसडर अर्थात् बृहत्तर सन्देश वाहक के रूप में भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, दुष्कर्म, अनाचार, अत्याचार के विरुद्ध कठोर निषेधात्मक वातावरण बनाना।

'मे दुहिता विराट्' (ऋ. 10.159.3) वेदादेश को चरितार्थ करने वाली बेटी पी.बी. सिन्धु, साक्षी मलिक के अतिरिक्त दीपा करमाकर और जीतू राय को भारत का सर्वोच्च सम्मान राजीव गान्धी खेल रत्न पारितोषिक प्रदान किया गया है, जो उनके वेदोक्त विराटत्व का अभिनन्दन है। अब लौटिये गोवर्धन पर्वत की ओर। इसे 'गिरिराज' भी कहा जाता है। (यजुर्वेद 26.21) के अनुसार **"उपह्वरे गिरीणाꣳ सङ्गमे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत्।।"** अर्थात् गिरि व नदियों के समीप ईश्वर उपासना व विद्या वृद्धि से मनुष्य उत्तम बुद्धि व कर्मयुक्त होकर सुखी होता है। पर्वत-सरिता तो हो उसकी परिक्रमा भी होती रहे, किन्तु उपासना-साधना न हो, तो सभी कुछ व्यर्थ हो जाता है। ऐसा ही एक भयंकर दृश्य गोवर्धन क्षेत्र में देखने को मिलता है। संसार के लोग तो गोवर्धन की ओर रात-दिन दौड़ लगाते हैं; किन्तु इसी के निकटवर्ती ग्राम देवसेरस में हत्याओं का सिलसिला बढ़ते देख कर सैकड़ों परिवार वहाँ से पलायन करने को बाध्य हुए हैं। (दै. हिन्दुस्तान 22.08.2016) निष्कर्ष यह है कि मनुष्य अपनी मानसी परिक्रमा करते हुए अपने गोलोक इन्द्रियों वाले देवस्थान (शरीर) को पराक्रमी बना लेता है तो मानो गोर्वधन धारी गोपाल का ग्वाल-बाल पुरुषार्थी बनकर अपनी जीवन यात्रा को सफल बना लेता है।

'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग अलीगढ़ 202001 (उ.प्र.)

www.thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 02 का शेष

मानव जीवन गाथा...

लक्ष्य है, वह इस शरीर में विद्यमान है। शरीर उसका मन्दिर है। इसे अपवित्र न होने दो। सबसे प्रेम करो, विश्व–प्रेम की भावना को जगाओ, सबके कल्याण के लिए सोचो।

इसलिए महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज का नियम बनाया–संसार का उपकार करना, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। सबको बराबर समझते हुए, ऊँच और नीच का भेद भूलकर सबके कल्याण की भावना मन में पैदा करोगे तभी यह बात होगी। विश्व–प्रेम ही वेद का धर्म है। पुकारकर वह कहता है–

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।
युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः।। ऋ. 5।60।5।।

तुममें से कोई बड़ा नहीं, कोई छोटा नहीं। तुम सब परस्पर भाई–भाई हो, एक–दूसरे को अपना कर आगे बढ़ो।

परन्तु किसलिए? क्या दूसरों के भवन गिराने के लिए? उनके घरों में आग लगाने के लिए? देवियों का सतीत्व लूटने के लिए और निर्बलों पर अत्याचार करने के लिए? नहीं, ऐसी बात वेद कभी कहता नहीं। वह कहता है, आगे बढ़ो सौभाग्य के लिए, उन्नति के लिए, सुख के लिए। ईश्वर तुम्हारा पिता है और यह धरती माता है। तुम सब परस्पर भाई–भाई हो। इस प्रकार रहने से तुम्हारे सारे दिन श्रेष्ठ बन जाएँगे।

वसुधैव कुटुम्बकम्।

सारा संसार तुम्हारा परिवार है, यह है वेद का उपदेश। बोलो कौन–सी संस्कृति, कौन–सा दर्शन इससे बड़ा है? कौन–सा "इज्म" इस विश्वप्रेम के समक्ष टिक सकता है? इस उपदेश को मान लिया जाए तो फिर किससे कोई घृणा करेगा? किससे कोई द्वेष करेगा? किसके विरुद्ध सैनिक नियम बनाए जाएँगे? किसके लिए ऐटम बम और हाइड्रोजन बम बनाए जाएँगे? और जब सब लोग मिलकर रहेंगे, मिलकर आगे बढ़ेंगे तो वह कौन–सी प्रसन्नता है जो प्राप्त नहीं होगी? कौन–सी समृद्धि है जो परे रहेगी।

परन्तु हम तो आत्मदर्शन की बात कर रहे थे न! आत्मदर्शन का वास्तविक अर्थ है ईश्वर–दर्शन, क्योंकि आत्मा के भीतर ही ईश्वर का निवास है। परन्तु यह दर्शन केवल कहने से तो नहीं होता। इसके लिए सबसे आवश्यक बात है ईश्वर–भक्ति की वह भावना जो मनुष्य को इस मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है–

धर्मार्थकाममोक्षाणां ज्ञानवैराग्ययोरपि।
अन्तःकरणशुद्धेन भक्तिः परं साधनम्।।

धर्म, अर्थ, काम और अन्त में मोक्ष– इन सबको पाने का परम साधन भक्ति है। प्रेम की भावना से, अपनेपन की भावना से, अन्य वस्तुओं की अभिलाषा छोड़कर अपने–आप को ईश्वर के अर्पण कर देना। हाथ जोड़कर कहना–

सपुर्दम बतो मायाये ख्वेश रा।
तू दानी हिसाबे कमो–बेश रा।।

अपने हाथ को उसके हाथ में देकर कहना–

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्।

हे अग्निदेव! हे परम शक्ति! परम ज्योति! हम कोई मार्ग नहीं जानते। तुम जो ठीक मार्ग समझते हो, उस मार्ग से हमें ले चलो। परन्तु केवल इतना कह देना, माँगना व माँगकर सो जाना भक्ति नहीं; ईश्वर–प्रणिधान–अपने को ईश्वर के अर्पण कर देना नहीं। भक्ति का और ईश्वर–प्रणिधान का अर्थ यह है कि जो कुछ करो वह ईश्वर को देना है। खोटा कर्म न करो क्योंकि वह ईश्वर को देना है। खोटा कर्म न करो क्योंकि उसे ईश्वर को अर्पित करते समय लज्जा से तुम्हारा सिर झुक जाएगा। यह है भक्ति! भक्ति का दूसरा अर्थ यह है कि जिसकी तुम पूजा करते हो, जिसके गुणों पर भरोसा करके उनसे सब–कुछ माँगते हो, उसके गुणों को कुछ–कुछ तुम भी अपने अन्दर धारण करो। तुम यदि ईश्वर से सुख माँगते हो तो दूसरों के लिए दुःख का कारण मत बनो। खाने–पीने की वस्तुओं में मिलावट करनेवाले, बड़े–बड़े आन्दोलन चलाकर लोगों में अशान्ति उत्पन्न करनेवाले और राष्ट्र को निर्बल करनेवाले, घूस लेनेवाले, लाखों रुपयों की करेंसी और करोड़ों रुपए का सोना चोरी से ले–जाने और ले–आने वाले–ये सब के सब अपने ही सुख के लिए तो करते हैं सब कुछ। परन्तु भूल गए हैं कि अन्ततोगत्वा उन्हें ईश्वर के सामने जाना है। भूल गए हैं कि ईश्वर का नेत्र हर समय प्रत्येक कार्य को देखता है, प्रत्येक स्थान पर देखता है। वे भूल गए हैं कि उस आँख से कुछ भी छिपा नहीं। भूल गए हैं कि प्रत्येक कर्म का फल मिलता है अवश्य। सब कुछ भूलकर वे केवल आज के सुख के पीछे–पीछे दौड़े जाते हैं। क्रियात्मक जीवन में कहते हैं–

अब तो आराम से गुजरती है।
आकबत की खबर खुदा जाने।।

प्रभु तो जानता है मेरे भाई! प्रत्येक बात को जानता है। तुम अपने लिए सोचो कि जो कर्म कर रहे हो, वे फल दिए बिना रहेंगे नहीं, इसलिए कोई भी ऐसा कर्म मत करो जिसके लिए बाद में पश्चात्ताप करना पड़े। इस विचार से प्रत्येक कार्य करो कि उसे ईश्वर के अर्पण कर देना है। कोई भी ऐसा कार्य मत करो जिसे तुम ईश्वर के अर्पण करते समय लज्जा के कारण पृथिवी में गड़ जाओ।

क्रमशः....

☞ पृष्ठ 05 का शेष

"आश्रम व्यवस्था में ही...

तथा प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर ले जाने वाली व्यवस्था का नाम ही वानप्रस्थ है। वानप्रस्थ आश्रम व्यवस्था किसी सीमा तक राष्ट्र में आर्थिक एवं बेरोजगारी की समस्या को हल करने में सहायक रहती है।

वानप्रस्थ आश्रम व्यवस्था एक ऐसी परियोजना है कि इसमें अनुभवी एवं ज्ञानी अध्यापकों, इंजीनियरों, डॉक्टरों, वकीलों, ऑफिसरों, प्रोफेसरों आदि को शिक्षा के क्षेत्र में सदुपयोग करके राष्ट्र में अधिक से अधिक शिक्षा का प्रचार–प्रसार किया जा सकता है और इससे अनिवार्य शिक्षा बिना किसी बजट के पूर्ण हो सकती है।

प्राचीन समय में वानप्रस्थ का बहुत अधिक महत्त्व था, इसीलिए समाज के लोग अधिक सुखी व सम्पन्न थे। राजा भी राज्य और गृहस्थ को त्याग कर, राज्य और सम्पत्ति को पुत्रों को सौंपकर मुनि वृत्ति को स्वीकार करते थे। इस प्रकार के अनेक प्रसंग प्राचीन साहित्य में उपलब्ध हैं। कालिदास ने रघुवंशियों की विशेषताओं में लिखा है कि वे वृद्धावस्था में मुनि वृत्ति को स्वीकार करते थे। **वार्धक्ये मुनिवृत्तीनाम्** (रघुवंश 1/8) दशरथ ने वृद्ध होने पर, राम को राज्य देकर वनों में जाने का विचार किया था। युधिष्ठिर के राज्यारोहण के बाद धृतराष्ट्र, विदुर, कुन्ती आदि वानप्रस्थी हो गये थे। परीक्षित के युवा होने पर, युधिष्ठिर ने उसको राज्य का भार सौंप दिया और पत्नी तथा भाइयों सहित वनों को चले गये। कालिदास, भवभूति, शक्तिभद्र, दिङ्नाग, मुरारि, राजशेखर आदि कवियों ने इस वानप्रस्थ का समर्थन किया है। (प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास–डॉ. कृष्ण कुमार, पृ. 403–404)

वानप्रस्थ का अर्थ वन में प्रस्थान करना है। साथ ही वानप्रस्थी की दिनचर्या और कर्त्तव्यों का उल्लेख किया गया है उससे भी यही सिद्ध होता है कि व्यक्ति को घर छोड़कर वन में चला जाना चाहिए और वहीं रहकर तपस्या कर अपने को संन्यास–आश्रम में प्रवेश करने के योग्य बनाना चाहिए, पर आज सामाजिक परिवेश भिन्न है। इस प्रकार शास्त्र में जैसा वानप्रस्थाश्रम का वर्णन है, क्या उसके अनुकूल वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में वैसा वानप्रस्थ घट सकता है? यदि नहीं तो वर्त्तमान सन्दर्भ में वानप्रस्थाश्रम को कौन सा स्वरूप दिया जाए कि वानप्रस्थाश्रम का मूल वैदिक सिद्धान्त भी जीवित रहे और परिवार और समाज को भी वे ही लाभ मिलें या मिलते रहें जो प्राचीन काल में मिलते थे।

इस विषय में विचार यह है कि प्राचीन काल के समान आज का मानव–जीवन सादा जीवन और उच्च विचार वाला न रहा, न वनों की स्थिति संतोषजनक रही। अतः वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में वानप्रस्थाश्रम का अर्थ होगा, जब एक गृहाश्रमी को पुत्र का पुत्र अर्थात् पौत्र या पौत्री हो जाए तब अपना समस्त उत्तरदायित्व अथवा गृहस्थी का मुखिया पद अपने पुत्र और पुत्र वधू को सौंप कर गृहस्थाश्रम से पूरी तरह मुक्त होकर शेष जीवन किसी आश्रम में बिताए और अपने पुत्र–पुत्रियों के समान समाज के सभी पुत्र–पुत्रियों को अपना पुत्र–पुत्री मानकर अपने ज्ञान और अनुभव से उनकी सेवा करे या किसी समाज, संस्था और समिति आदि से जुड़कर परोपकारार्थ तन, मन और स्वयं के पास धन हो तो धन से निस्वार्थ सेवा करे या यदि स्वयं के पास भरण–पोषण के साधन नहीं हों तो बिना लोभ लालच के अपना जीवन चलता रहे उतना निर्वाह भत्ता लेकर सेवा करे। शेष जीवनचर्या प्राचीन काल के वानप्रस्थाश्रम के समान ब्रह्मचर्यपूर्वक योगाभ्यास, स्वाध्याय (वेद और वैदिक साहित्य का पठन–पाठन) तपस्या, मिर्च–मसाले रहित सादा भोजन, प्रतिदिन अग्निहोत्र सहित पंचमहायज्ञ, सादे वस्त्रों का पहनना, सादा बिस्तर लगाकर भूमि पर सोना, गौ आदि पशु रक्षा करे।

किसी कारण से यदि आश्रम में रहने की व्यवस्था न हो सके तो घर में भी रहे तो भी ऐसे रहे जैसे घर से दूर आश्रम में ही रह रहे हों। शेष जीवनचर्या वैसी ही हो जैसी ऊपर वर्णित की गई है।

जहाँ तक धर्मपत्नी का साथ रहने का सवाल है तो वानप्रस्थी जैसा जीवन बनाकर वह भी वानप्रस्थी पति के साथ रह सकती है। ऐसी स्थिति में दोनों में विषय अर्थात् काम चेष्टा नहीं होनी चाहिए अर्थात् दोनों को पूर्णतः यौनिक संयम से अपना जीवन चलाकर अपने ज्ञान और अनुभव से समाज की निःस्वार्थ भाव से सेवा करनी चाहिए।

सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल
उदय पुर (राजस्थान)

www.thearyasamaj.org

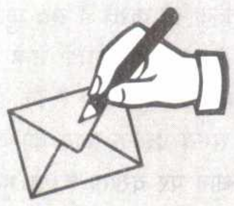

पत्र/कविता

ओ३म् एक पुरवैया

ओ३म् जपो मेरे भाई ओ३म् जपो मेरे मैया।
भवसागर के कठिन सिन्धु का ओ३म् ही एक खिवैया।
ओ३म् असंभव को सभव कर देता है।
क्रन्दन के स्वर में कलरव भर देता है।
पारस है लोहे को कुन्दन कर देता।
धूलि कणों को भी यह चन्दन कर देता।

सारा जग पतझड़ समान है ओ३म् एक पुरवैया।
ओ३म् जपो मेरे भाई ओ३म् जपो मेरे मैया।
ओ३म् जपे से सारे बंधन खुल जाते।
पाप पंक के कल्मष सारे धुल जाते।
ओ३म् जपे से पूरा होता हर सपना।
इसीलिए सब त्याग ओ३म् निशिदिन जपना।

ओ३म् जपे से भरती मन की सूखी ताल तलैया।
ओ३म् जपो मेरे भाई ओ३म् जपो मेरे मैया।
ओ३म् बिना मन–मीन सदा से प्यासी है।
ओ३म् बिना हर सुख वैभव संन्यासी है।
ओ३म् जपे से भगती दूर उदासी है।
ओ३म् जपे हर मावस पूरनमासी है।

सकल विश्व छोटा–सा ओ३म् पिता औ' मैया।
ओ३म् जपो मेरे भाई ओ३म् जपो मेरे मैया।
ओ३म् जपे से मरघट पनघट हो जाये।
विष का सागर भी झट मधुघट हो जाये।
बहुत दूर पीड़ा का जमघट हो जाये।
सीधी जीवन की हर सलवट हो जाये।
ओ३म् बिना डोलती 'मनीषी' डगमग–डगमग नैया।
ओ३म् जपो मेरे भाई ओ३म् जपो मेरे मैया।

डॉ. सारस्वत मोहन 'मनीषी'
ए–13–14, सै. 11, रोहिणी
दिल्ली

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह 1938 आर्यन कान्फ्रेंस शोलापुर-घोषणा

आर्य सत्याग्रह के सम्पूर्ण अधिकार श्री नारायण स्वामी जी को दिए जाने पर उन्होंने मुम्बई प्रान्त के शोलापुर शहर में 25–26–27 दिसम्बर सन 1938 को आर्य महासम्मेलन की घोषणा कर दी। स्वामी जी की यही मन्शा थी कि सारे भारत के आर्यों का इस सम्मेलन द्वारा अभिमत लिया जाये जिससे की सत्याग्रह सुचारु रूप से संगठित होकर चलाया जाये। इससे पूर्व अनेकों निवेदनों का कोई असर निज़ाम सरकार पर न पड़ता देखकर यह ज़रूरी हो गया था कि राज्य में उन मांगों को मनवाने के उद्देश्य से निजाम सरकार पर दवाब डाला जाये। दबाव तन्त्र का यह पहला प्रयोग राज्य आर्य समाज ने सत्याग्रह के माध्यम से किया पर यह सत्याग्रह का दवाब मन्त्र कहीं असफल न हो इसके लिए जनमत होना आवश्यक था। स्वामी जी 30 अक्टूबर 1938 को ही शोलापुर पहुँच गये। उन्होंने 2 मास वहाँ रहकर शोलापुर सत्याग्रह सम्मेलन को सफल बनाने के लिए रातदिन कार्य किया। स्वामी जी के साथ सत्याग्रह को सफल बनाने के लिए गुलबर्गा हाईकोर्ट के प्रसिद्ध वकील श्री पं. दत्तात्रेय प्रसाद जी की अध्यक्षता में स्वागत–समिति की रचना की गई। मंगलवार पेठ में इस महासम्मेलन का कार्यालय स्थापित कर यहीं से सारे देश से संपर्क स्थापित किया जाता रहा तथा धनजन की आपूर्ति व्यवस्था सुनिश्चित की गई।

25 दिसम्बर को आर्य महासम्मेलन प्रारम्भ हुआ देश के कोने–कोने से हज़ारों की तादाद में लोग उमड़ने लगे। सम्मेलन की उत्सुकता निज़ाम के खिलाफ होने जा रहे सत्याग्रह के कारण और भी बढ़ गयी थी। इस सम्मेलन में देश की 89 शाखाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे। लगभग 25000 पचीस हज़ार प्रतिनिधियों की उपस्थिति दर्ज की गई।

नौजवानों और कार्यकर्ताओं का जोटा साफ दिखाई दे रहा था। हर व्यक्ति यह सोचता था कि सत्याग्रह का असर निज़ाम पर किस तरह का और कितना पड़ेगा। संगठन में ही शक्ति है इस भावना से हर युवक निजाम राज्य की प्रजा के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने के लिए मानसिक पृष्ठभूमि तैयार करने में लगा हुआ था।

इस सम्मेलन में कुल 20 प्रस्ताव किए गये जिनमें निजाम राज्य में किए जा रहे दमन पर रोक लगाने तथा धार्मिक रीति रिवाजों पर लगाए गये प्रतिबन्धों को हटाने के लिए स्पष्ट शब्दों में निर्देश दिए गये थे। प्रस्ताव सं. 4–5 में उल्लिखित मांगों के अनुसार धार्मिक अधिकारों को फिर से बहाल करने की मांग रखी गयी थी। इन प्रस्तावों के साथ सरकार के यह स्पष्ट कर दिया गया था कि यह सम्मेलन सिर्फ धार्मिक मांगों की प्राप्ति के लिए सत्याग्रह की घोषणा करता है। इसका कोई ऐसा इरादा नहीं है जिसमें राज्य में निजाम सरकार के खिलाफ कोई आन्दोलन खड़ा करे वह शुद्ध धार्मिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए ही सत्याग्रह का मार्ग चुन रहा है। अथवा यह कहना उचित होगा कि उसे यह मार्ग स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है।

हरिश्चन्द्र आर्य
अमरोहा, मुरादाबाद

****

ध्यान क्यों नही लगता?

कुछ सज्जनों का कहना है कि सन्ध्या (ईश्वर भक्ति) करते समय ध्यान नहीं लगता। ध्यान क्यों नहीं लगता इसका कारण है कि धारणा दृढ़ नहीं है। ध्यान लगाने से पहले धारणा बनानी पड़ती है। यदि धारणा पक्की नहीं है तब ध्यान कभी नहीं लगेगा। ध्यान लगाने के लिए धारणा को अटूट बनना पड़ता हैं।

धारणा बनती है मन के द्वारा और मन है चंचल। फिर पहले मन को वश में करो। मन बुद्धि के अधीन है। यदि बुद्धि में ही मलिनता भरी हुई है तब मन मनमानी करने में स्वतंत्र हो जाता है। इन्द्रियों के बहकावे में आकर संयम खो देता है। धारणा धरी रह जाती है। फिर ध्यान लगाने का प्रश्न ही नहीं होता।

प्रिय बंधुओ! पहले बुद्धि को निर्मल करो! बुद्धि की निर्मलता के लिए शुद्ध सात्विक आहार ग्रहण करो! तामसिक भोजन से बचो जो बुद्धि भ्रष्ट करता है। विद्वानों का सत्संग करो! आर्य पुस्तकों का स्वाध्याय करो। मन को वश में करने के लिए प्राणायाम द्वारा अभ्यास करो। मन में धारणा बनाओ कि ईश्वर उपासना करनी आवश्यक है। धारणा जमते ही ध्यान लगाना संभव है जाएगा। जैसे प्यासे व्यक्ति की धारणा पानी प्राप्त करने की ओर ध्यान लगा देती है ऐसे ही ईश्वर भक्ति बनाने से ध्यान लग जाता है।

देवराज आर्य मित्र
नई दिल्ली–64

****

www.thearyasamaj.org

बी.बी.के डी.ए.वी. कॉलेज में '47वें पुरस्कार वितरण समारोह' का आयोजन

बी. बी. के डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन के उर्वी सभागार में '47वें पुरस्कार वितरण समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस समारोह में इंजीनियर श्री श्वेत मलिक, संसद सदस्य, राज्य सभा मुख्यातिथि के रूप में पधारे। कार्यक्रम का आरम्भ डी.ए.वी. गान एवं वेद मंत्रोच्चारण सहित ज्योति–प्रज्ज्वलन से हुआ। कॉलेज प्राचार्या डॉ. पुष्पिंदर वालिया एवं श्री सुदर्शन कूपर, अध्यक्ष, स्थानीय प्रबंधकर्त्री समिति ने आए हुए मुख्यातिथि का पुष्पगुच्छों से हार्दिक स्वागत किया।

प्राचार्या डॉ. वालिया ने कॉलेज की वार्षिक रिर्पोट पढ़ते हुए कॉलेज द्वारा अकादमिक, सांस्कृतिक व खेल क्षेत्रों में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के संघर्ष पूर्ण प्रयत्नों से ही आज लड़कियाँ सशक्त होकर समस्त क्षेत्रों में आगे बढ़ रही हैं।

मुख्यातिथि इंजीनियर श्री श्वेत मलिक ने अपने प्रेरणादायक सम्भाषण में डी.ए.वी. संस्थाओं द्वारा पूर्ण निष्ठा एवं लगन से दी जा रही वैदिक एवं भौतिकी शिक्षा की प्रशंसा की और कहा कि कौशल–सम्पन्न शिक्षा समय की मांग है इसलिए हमें राष्ट्र की उन्नति के लिए यह शिक्षा युवा पीढ़ी को अवश्य देनी चाहिए। उन्होंने कॉलेज को दस लाख रुपये की धन राशि प्रदान करने की घोषणा की और छात्राओं को स्वर्णिम भविष्य का आशीर्वाद दिया।

इस अवसर पर 700 के लगभग प्रतिभाशाली छात्राओं को उनकी विभिन्न सफलताओं पर पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त सुश्री दृष्टि मिश्रा को 'श्री सरस्वती देवी अवार्ड फॉर अकादमिक एवं सांस्कृतिक एक्टिविरीज़' सुश्री तानिया को 'श्री ए.एस. सोनी अवार्ड फॉर ऑलराउंडर' और सुश्री गगनदीप कौर को 'स्पोर्टस स्टार ऑफ द ईयर अवार्ड' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कॉलेज की अकादतिक, सांस्कृतिक एव खेल जगत् की गतिविधियों सम्बन्धी 'न्यूज बुलेटिन' का विमोचन भी किया गया।

कॉलेज छात्राओं द्वारा 'मैं जीना चाहती हूँ' नामक नाटक, लोकगीत एवं मिमिक्री की प्रस्तुति ने उपस्थिति को आनन्द विभोर कर दिया। प्रो. मनजोत संधु, प्रो. अनीता नरेन्द्र, प्रो. सुषमा मनोचा एवं प्रो. शैली जग्गी ने श्रेष्ठ मंच संचालन किया। कार्यक्रम के अंत में श्री सुदर्शन कपूर जी ने मुख्यातिथि एवं अन्य उपस्थिति का हार्दिक धन्यवाद किया।

सोहन लाल डी.ए.वी. अम्बाला शहर में तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी सम्पन्न

सोहन लाल डी.ए.वी. शिक्षण महाविद्यालय, अम्बाला शहर में ऑल इंडिया एसोसियशन फॉर एजूकेशन रिसर्च के सहयोग से तीन दिवसीय अंतराष्ट्रीय गोष्ठी आज सम्पन्न हुई। लगभग 75 शोधकर्ताओं ने इस गोष्ठी भाग लिया और शिक्षा तथा शिक्षण से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विचार विमर्श किया। डॉ. मधु चितकारा, कुलपति, चितकारा विश्वविद्यालय, श्री राजेन्द्र नाथ जी, उपप्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली मुख्यातिथि के रूप में पधारे। इस कॉनफ्रैंस का निर्देशन प्रो. सुनील बिहारी मोहन्ती, जनरल सैकट्ररी, ए.आई. ए.ई.आर, पांडूचैरी ने किया। कॉनफ्रैंस के प्रथम सत्र में कनाडा से आए पॉल रैन्जर, ने शिक्षा से जुड़े विभिन्न पहलूओं पर अपने विचार रखे।

समापन सत्र में प्रो. सौलोमन मारग्रैट कैलेफोरनिया, अमेरिका ने अध्यापन तथा सीखने से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं के बारे में बताते हुए कहा कि एक अध्यापक को अपने अध्यापन को प्रभावशाली बनाना चाहिए ताकि उससे छात्र अच्छी तरह सीख सकें। एक अध्यापक को पता होना चाहिए कि क्या और कैसे पढ़ाया जाना चाहिए। उसका केन्द्रबिन्दु सिखाना होना चाहिए।

इस गोष्ठी की संयोजिका डॉ. संयोजिका डॉ. नीलम लूथरा ने प्रो. मारग्रैट से अमेरिका में किये जाने वाले शिक्षा सम्बन्धित प्रकल्पों के बारे में चर्चा की तथा कॉलेज प्रशासन की तरफ से उनका धन्यवाद किया।

कॉलेज प्राचार्य डॉ. विवेक कोहली ने शब्दों के माध्यम से मुख्यातिथि सहित सभी शोधकर्ताओं का धन्यवाद किया।

इस कॉनफ्रैंस में डॉ. विवेक कोहली, डॉ. रेनू अरोड़ा, डॉ. नरेन्द्र कौशिक, डॉ. नीलम लूथरा, डॉ. सतनाम कौर, डॉ. पूजा तथा प्रो. पवन कुमार, डॉ. मनोज सक्सेना, प्रो. दीपिका विग, डॉ. वी.के. गुप्ता, डॉ. नंदिता शुक्ला, डॉ. प्रसमिता मोहन्ती, डॉ. वी.के. रघु, डॉ. डी.के. दीवान, डॉ. एस. के. मंगल ने तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की तथा रिसर्चरस का मार्गदर्शन किया।

इस कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. नीलम लूथरा ने मंच संचालन किया तथा "सतत्र विकास में शिक्षा की भूमिका के बारे बताते हुए कहा कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे धार्मिक, नैतिक तथा चारित्रक विकास हो सके।

डायन, भूतप्रेत के नाम पर अत्याचार के विरोध में आर्य समाज ने मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजा

डायन, भूत, प्रेत एवं आत्मा के साये के नाम से महिलाओं पर हो रहे पाश्विक अत्याचारों एवं मानसिक यंत्रणा के विरोध में आर्य समाज कोटा द्वारा ऐसे कृत्य करने वालों के खिलाफ आवश्यक कार्यवाही करने की मांग को लेकर आर्य समाज ने मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा।

आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्ढा के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल ने अतिरिक्त जिला कलेक्टर, कोटा शहर, से मिलकर ऐसे अंधविश्वास, पाखण्ड एवं तंत्रमंत्र के गोरखधंधे को बढ़ावा देने वालों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्यवाही करने के लिए राजस्थान की मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन दिया।

इस अवसर पर अर्जुनदेव चढ्ढा ने कहा कि डायन, भूतप्रेत एवं आत्मा के नाम पर महिला को गंदे जूतों से पानी पिलाना, गर्म चिमटों से दागना, पीटना, बेड़ियों में जकड़ना, अमानवीय कार्य है। आर्यसमाज महिलाओं पर इस प्रकार के अत्याचार का विरोध करता है।

उन्होंने बताया कि ऐसी घटनाएं कोटा, बूंदी, बारां, भीलवाड़ा, चित्तौड़ आदि जिलों में विशेष रूप से देखने को मिलती हैं। अंधविश्वास का सर्वाधिक शिकार महिलाएं होती हैं। आर्यसमाज इसके विरोध में जनजागृति अभियान चलायेगा।

अतिरिक्त जिला कलेक्टर ने प्रतिनिधियों को आश्वस्त किया कि हम आपके साथ हैं जो भी उचित कार्यवाही होगी की जावेगी।

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 07/08-12-2016
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39\57

डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, दुर्गापुर में नये अंदाज़ में मनाया गया 'ऋषि निर्वाण दिवस'

आर्य युवा समाज डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, दुर्गापुर ने अपनी गतिविधियों को विद्यालय से बाहर साधारण जनमानस तक पहुँचाने के उद्देश्य से इस बार 'ऋषि निर्वाण दिवस' आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों के साथ श्रेष्ठकर्म यज्ञ करके और मिठाई एवं ऊनी वस्त्र वितरण करके मनाया। ऋषि निर्वाण दिवस का शुभारंभ आर्य समाज के सभी सदस्यों ने वृहद् यज्ञ से किया। जिसकी यजमान स्वयं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा की प्रधान एवं क्षेत्रीय निदेशिका श्रीमती पापिया मुखर्जी रहीं।

यज्ञ में आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के बच्चों ने और विद्यालय के सातवीं कक्षा के छात्रों ने भी भाग लिया। सभी ने यज्ञ में विशेष आहुतियाँ दीं। यज्ञ के अंत में संगीत शिक्षिका सुश्री श्रावणी मंडल ने और उनकी भजन मंडली ने अपने मधुर भजनों से उपस्थित बच्चों को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रधान महोदया के निर्देशानुसार बाहर से आए हुए बच्चों को विद्यालय के छात्रों के करकमलों से मिठाई एवं ऊनी वस्त्र वितरण किये गये। इसके पश्चात् आर्य युवा समाज के प्रतिनिधि श्री पंकज कुमार दुबे ने सभी छात्रों को सदा दूसरों की मदद करने का संकल्प लेने के लिए कहा। इसके पश्चात् प्रधान महोदया ने कार्यक्रम मे उपस्थित सभी सज्जनों को संदेश देते हुए कहा कि **"दानं भोगो नाशस्तिस्त्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।** यो न ददाति न भुड्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति"।। अर्थात् धन की तीन गति होती है। दान, भोग अथवा नाश इसलिए हर मनुष्य को सामर्थ्य के अनुसार जरुरतमंद लोगों की हमेशा मदद करनी चाहिए। अंत में शांति पाठ के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ।

इसी दिन सायंकालीन वेला में प्रधान महोदया के दिशानिर्देशन में जन–जन तक आर्य समाज की विचार धारा पहुँचाने के उद्देश्य से ही ऋषि निर्वाण दिवस विद्यालय–भवन से बाहर आर्य युवा समाज डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, दुर्गापुर और हनी डयू सोसाइटी ने संयुक्त रुप से वैदिक यज्ञ करके और उरी हमल में शहीद हुए देश के वीर जवानों को श्रद्धांजलि देकर मनाया। यज्ञ के अंत में हनी डयू सोसाइटी के निवासियों और बाहर से आए हुए सज्जनों को संबोधित करते हुए श्री प्रवेश शास्त्री ने आर्य समाज और डी.ए.वी. विद्यालयों के विचारों से अवगत करवाते हुए कहा कि संसार का उपकार करना आर्य समाज और डी.ए.वी. विद्यालयों का उद्देश्य है। इसलिए अधिक से अधिक सज्जनों को इन संस्थाओं से जुडना चाहिए। अंत में इस कार्यक्रम का भी समापन शांति पाठ के साथ हुआ।

हिन्दी पुत्री पाठशाला सीः सैः खन्ना में वैदिक यज्ञ

हिन्दी पुत्री पाठशाला सीः सैः खन्ना में ऋषि दयानन्द को स्मरण बड़ी श्रद्धा से किया गया जिसमें स्थानीय डी.ए.वी. संस्थाओं–हिन्दी पुत्री पाठशाला सीः सैः, डी.ए.वी. मॉडल सीः सैः, डी.ए.वी. पब्लिक सीः सैः, वेद मन्दिर मॉडल हाई स्कूल, खन्ना के अध्यापक–अध्यापिकाओं, छात्र–छात्राओं तथा आर्य समाज खन्ना के सदस्यों ने भाग लिया। संस्था के चेयरमैन श्री कुलभूषण राय सोफत, चेयरमैन मैनेजर श्रीमती सरोज कुन्दरा, प्रि. श्रीमती अनीता वर्मा, श्री शाम सुन्दर, कार्यकारिणी तथा आर्य समाज के सदस्यों ने मुख्यातिथि डॉ. श्रीमती सुशीला रानी सूद डॉ. श्रीमती ममता सूद (MBBS, MD CHILD SPECIALST) विशेषातिथि श्रीमती अमरजीत कौर एवं स. सुच्चा सिंह जी

(NRI) कैनेडा निवासी जी का पुष्प वृन्दों से स्वागत किया। समारोह का शुभारम्भ हवन यज्ञ से हुआ। तत्पश्चात् मुख्यातिथि द्वारा ज्योति प्रज्ज्वलन तथा ध्वजारोहण किया गया। इसके बाद मैनेजर श्रीमती सरोज कुन्दरा जी ने महर्षि दयानन्द जी के समाज पर किए उपकारो का स्मरण करते हुए कहा कि स्वामी जी ने नारी शिक्षा, छुआछूत, पाखण्ड, कुरीतियों के विरूद्ध आवाज़ उठाई तथा वर्तमान नारी सशक्तिकरण का आधार बनाया। मुख्यातिथि डॉ. ममता सूद जी का परिचय देते हुए श्रीमती कुन्दरा ने कहा कि श्रीमती सुशीला रानी सूद का जीवन ही बच्चों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। असहायों की सहायता, जरूरतमंद कन्याओं की शिक्षा के लिए दान देना इनके जीवन का लक्ष्य है।

स्व. श्रीमती कमलेश सभ्रवाल भूतपूर्व वाईस प्रिंसीपल, हिन्दी पुत्री पाठशाला, प्रि. डी.ए.वी. पब्लिक सीः सैः जी की पुण्य स्मृति में भजन–गायन प्रतियोगिता कराई गई जिसमें सभी स्थानीय डी.ए.वी. संस्थाओं तथा वेद मन्दिर मॉडल हाई स्कूल के छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। मुख्यातिथि जी द्वारा भजन–गायन प्रतियोगिता में विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कार वितरित किए।

इस अवसर पर प्रि. श्रीमती ममता शर्मा, श्री सोमदेव आर्य, श्री जितेन्द्रीय भूषण, श्री देव सेन, श्री प्रितपाल गुजराल, श्री सोहन लाल श्री कृष्ण चन्द धीर श्रीमती मधु कालिया जी उपस्थित रहे। अन्त में उपस्थित आर्य जनों को यज्ञ शेष वितरित किया गया।

डी.ए.वी. भूपिन्द्रा रोड़ पटियाला में राष्ट्रीय खेल-2016, पंजाब राज्य (लड़कियाँ) खेल महाकुंभ सम्पन्न

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान डॉ. पूनम सूरी जी के आशीर्वाद तथा डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, नई दिल्ली के तत्वावधान में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल भूपिन्द्रा रोड, पटियाला द्वारा 'डी.ए.वी. राष्ट्रीय खेल–2016, पंजाब राज्य (लड़कियाँ)' खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन खेल प्रतियोगिताओं में पंजाब के 'लुधियाना व जालंधर', 'अमृतसर', 'बठिंडा' और 'पटियाला व फिरोजपुर' जोन के 27 विद्यालयों से लगभग '500' प्रतियोगियों ने 'एथलेटिक्स', 'क्रिकेट', 'हैंड–बॉल', 'वालबॉल', 'खो–खो', 'कबड्डी', तथा 'स्केटिंग आदि विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में भाग लिया। इस खेल महाकुंभ के जोनल

संयोजक प्राचार्य एस आर प्रभाकर ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि व अन्य मेहमानों का स्वागत किया।

शुभारंभ मुख्य अतिथि प्रि. विजय कुमार शर्मा (क्षेत्रीय निर्देशक, पटियाला व फिरोजपुर जोन) ने डी.ए.वी. गान के साथ ध्वजारोहण करके किया और अपने संबोधन में कहा प्रधान मंत्री मोदी एवं डी.ए.वी. संस्था के प्रधान श्री पूनम सूरी जी का यही सपना है कि डी.ए.वी. के खिलाड़ी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी छाप–छोड़ कर देश का नाम रोशन करें। हमारे लिए यह बड़े गौरव की बात है कि डॉ. पूनम सूरी जी के प्रयासों से इन खेल प्रतियोगिताओं से प्राप्त प्रमाण–पत्रों की भी राष्ट्रीय स्तर पर ग्रेडिंग की जाएगी।

इस आयोजन की अध्यक्षता करते हुए डॉ. नरिन्दर सिंह (सहायक, जिला शिक्षा अधिकारी, खेल विभाग) ने कहा, ''खेल हमें केवल शारीरिक व मानसिक स्वस्थता ही प्रदान नहीं करते बल्कि खेलों से राष्ट्रीयता की भावना भी पैदा होती है। खिलाड़ी को सफलता के लिए कड़ी मेहनत और निरंतर अभ्यास के साथ एक अच्छे शिक्षक (कोच) की भी अति आवश्यकता होती है। डी.ए.वी. के बच्चे बड़े भाग्यशाली हैं; कि उन्हें इतने अच्छे शिक्षक (कोच) व सुविधाएं मिली हैं।'' इस अवसर पर श्री संजीव शर्मा (प्राथमिक, जिला शिक्षा अधिकारी, पटियाला) विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.**, डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**